प्रकाशितवाक्य की पुस्तक

अध्याय 1

प्रकाशितवाक्य की पृष्ठभूमि

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1
ऐतिहासिक पृष्ठभूमि....1
- **लेखक**....2
  - प्रेरित यूहन्ना....2
  - स्थान और अनुभव....4
- **समय**....5
  - नीरो....6
  - डोमीशियन....8
- **श्रोता**....11
  - व्यापार संघ....12
  - यहूदी समुदाय....12
  - रोमी प्रशासन....12
  - स्वच्छंद मसीही....13

धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि....14
- **युगांत-विज्ञान**....14
- **वाचा**....19
- **भविष्यवक्ता**....21
  - वाचाई दूत....21
  - संभावित परिणाम....24
  - प्रेरित यूहन्ना....25

साहित्यिक पृष्ठभूमि....27
- **भविष्यवाणी**....27
  - विशेषताएँ....28
  - पूर्णताएँ....30
- **प्रकाशन-संबंधी साहित्य**....32
  - विशेषताएँ....32
  - ऐतिहासिक विकास....37

उपसंहार....39

परिचय

जब यीशु की मृत्यु हुई, तो उसके बहुत से चेलों और प्रशंसकों ने समझा कि उसने अपनी अंतिम पराजय का अनुभव कर लिया था। कुछ ने तो यहाँ तक समझा कि उसकी सारी शिक्षाएँ और आश्चर्यकर्म व्यर्थ थे। जो बात उसके चेले तीसरे दिन तक नहीं समझ पाए वह यह थी कि यीशु की मृत्यु कहानी का अंत नहीं थी। वास्तव में, उसके पुनरुत्थान ने प्रमाणित कर दिया था कि उसकी मृत्यु वास्तव में उसकी विजय थी। उसके पुनरुत्थान ने उसके चेलों को यीशु की सेवकाई, दुःख और मृत्यु को एक बिल्कुल नए दृष्टिकोण से समझने में सहायता की। और जब यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखी, तो उसके पाठकों को एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता थी। आरंभिक कलीसिया ने शक्तिशाली रोमी साम्राज्य से सताव का सामना किया। और कई मसीही इसे एक पराजय के रूप में देखने लगे। परंतु यूहन्ना ने अपने पाठकों को उत्साहित किया कि वे उस विजय में राहत और भरोसे को प्राप्त करें जिसे यीशु ने अपने पुनरुत्थान में प्राप्त की है। वह चाहता था कि वे इस बात को समझ लें कि यदि उनके जीवनों का अंत शहादत में भी हो जाता है, तो भी यह उनकी कहानी का अंत नहीं होगा। अंततः यीशु अपने राज्य को पूर्ण करेगा, और इस संसार में जीवन बितानेवाला प्रत्येक विश्वासी उस विजय में भागीदार होगा।

यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक, जिसे कई बार प्रकाशन या यूहन्ना का प्रकाशन भी कहा जाता है, की हमारी श्रृंखला का पहला अध्याय है। हमने इस अध्याय का शीर्षक "प्रकाशितवाक्य की पृष्ठभूमि" दिया है। इस अध्याय में हम देखेंगे कि प्रकाशितवाक्य का संदर्भ और इसकी रूपरेखा इसके मूल अर्थ को समझने और इसके संदेश को आधुनिक संसार में अपने जीवनों पर लागू करने में हमारी सहायता कर सकती है।

प्रकाशितवाक्य की पृष्ठभूमि पर आधारित यह अध्याय तीन भागों में विभाजित होगा। पहला, हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करेंगे। दूसरा, हम इसकी धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर चर्चा करेंगे। और तीसरा, हम इसकी साहित्यिक पृष्ठभूमि पर ध्यान देंगे। आइए प्रकाशितवाक्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ आरंभ करें।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ने अपने लेखन के समय से ही विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों को आकर्षित किया है। परंतु विभिन्न व्याख्याकार इस पुस्तक के चिह्नों और रूपकों को बहुत ही भिन्न-भिन्न रूपों में समझते हैं। विचित्र प्राणी, आकाशीय युद्ध, विपत्तियाँ और न्याय — कुछ व्याख्याकार इन रूपकों को इतने असमंजसपूर्ण पाते हैं कि वे पवित्रशास्त्र के इस भाग को समझने की सारी आशा खो बैठते हैं। परंतु सच्चाई यह है कि यह अधिकांश असमंजस पुस्तक के ऐतिहासिक संदर्भ से हमारी अपरिचितता के कारण उत्पन्न होता है। इसलिए प्रकाशितवाक्य की सही व्याख्या करना और उसे लागू करना सीखने में इसके इतिहास के विषय में कुछ बातों को समझना हमारी सहायता करेगा।

> बाइबल की प्रत्येक पुस्तक की संरचना को समझने में योग्य होने का महत्व बहुत बड़ा है। मैं यह नहीं कहूँगा कि यह अत्यावश्यक है, इस बात पर ध्यान दें — परमेश्वर के वचन का एक अनंत कार्य है, और लोग इससे प्रत्यक्ष रूप से संबंध

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> रख सकते हैं, और यदि आप इसकी वास्तविक संरचना को नहीं भी जानते, फिर भी यह इसे सत्य बने रहने से नहीं रोकता। यह कहने के द्वारा हम बाइबल से और अधिक बातों को प्राप्त करेंगे यदि हम उस वास्तविक संरचना को समझ लें जिसमें यह लिखी गई थी, और हम समझ सकते हैं कि इसे इस संस्कृति के, इस समय के लोगों के लिए इन विशेष विषयों के साथ लिखा गया था। और जब हम देखते हैं कि हम इसे बेहतर रीति से संभाल सकते हैं, तो यह हम पर कैसे लागू होता है? यद्यपि हम भिन्न परिस्थिति में हैं फिर भी हम उसके मूल संदेश के अर्थ के साथ सामंजस्य बैठा सकते हैं। और इस प्रकार, पुस्तकों की ऐतिहासिक संरचना को खोजने के कार्य में बड़े प्रयास किए जाते हैं, और कई बार इससे बड़े-बड़े उत्तर भी नहीं मिलते, परंतु कई बार हम इसकी एक अच्छी समझ को प्राप्त कर सकते हैं कि मूल संदर्भ क्या था। और जब हम उसे प्राप्त कर लेते हैं, तो हम उस संदर्भ से अपने संदर्भ में उसे लागू करने की अच्छी स्थिति में होते हैं।
>
> — डॉ. पीटर वॉकर

हम प्रकाशितवाक्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के तीन आधारभूत पहलुओं को देखेंगे : इसका लेखक; इसके लिखे जाने का समय; और इसके मूल श्रोता। आइए प्रकाशितवाक्य के लेखक के साथ आरंभ करें।

लेखक

हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लेखक की खोज दो तरीकों से करेंगे। पहला, हम देखेंगे कि यूहन्ना को इस पुस्तक का लेखक मानने की पारंपरिक रीति विश्वसनीय है। और दूसरा, हम यूहन्ना के स्थान और अनुभव की खोज करेंगे जब उसने इसे लिखा था। आइए पहले उस पारंपरिक दृष्टिकोण की ओर मुड़ें कि प्रेरित यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा था।

प्रेरित यूहन्ना

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लेखक ने अपना परिचय काफी प्रचलित नाम "यूहन्ना" से दिया है। उसने अपने नाम का उल्लेख प्रकाशितवाक्य 1:1, 4, 9, और 22:8 में किया है। परंतु उसने अपना परिचय विशेष रूप से प्रेरित यूहन्ना के रूप में नहीं दिया है। उसने यह उल्लेख अवश्य किया है कि उसने विश्वासयोग्यता के साथ यीशु की सेवा की, और कि उसने परमेश्वर के राज्य के लिए दुःख उठाया। और इस पुस्तक से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वह एक भविष्यवक्ता था। परंतु ये सामान्य विवरण यह दर्शाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं कि जिस व्यक्ति ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखी वह प्रेरित यूहन्ना था।

फिर भी, पारंपरिक दृष्टिकोण की पुष्टि करने के लिए कम से कम दो अच्छे कारण हैं कि प्रेरित यूहन्ना ने यह पुस्तक लिखी है। पहली बात यह है कि बहुत से आरंभिक विश्वसनीय गवाहों ने प्रमाणित किया है कि वही इस पुस्तक का लेखक था।

दूसरी ही शताब्दी में जस्टिन मार्टियर, आयरेनियस, और अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट जैसे कलीसियाई पूर्वजों ने प्रेरित यूहन्ना को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लेखक के रूप में पहचाना था। जस्टिन ने डायलॉग विद ट्रिफो नामक अपनी पुस्तक के अध्याय 81 में यह दावा किया था। जस्टिन की गवाही विशेष रूप से इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वह दूसरी सदी के आरंभ में इफिसुस में ऐसे लोगों के बीच रहा था जो यूहन्ना को व्यक्तिगत तौर पर जानते थे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आयरेनियस ने अपनी कृति अगेंस्ट हेरेसीज़ की पुस्तक 4, अध्याय 18, खंड 11 में यूहन्ना के लेखक होने का उल्लेख किया है। उसकी गवाही भी काफी सहायक है, क्योंकि आयरेनियस, पोलीकार्प का चेला था, जो स्वयं प्रेरित यूहन्ना का चेला रहा था। इसके फलस्वरूप, आयरेनियस इस जानकारी के विषय में एक बेहतर स्थिति में था कि यूहन्ना ने वास्तव में कौन-कौन सी पुस्तकें लिखी थीं।

अंततः ऐसा प्रतीत होता है कि अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट ने अपनी पुस्तक हू इज़ द रिच मैन दैट शैल बी सेव्ड? के खंड 42 में यूहन्ना को इस पुस्तक का लेखक माना था।

इस पारंपरिक दृष्टिकोण कि यूहन्ना ने ही प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा है की पुष्टि करने का दूसरा कारण इसकी शब्दावली है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक शब्दावली और यूहन्ना की अन्य पुस्तकों की शब्दावली में बहुत सी समानताएँ हैं। समय की कमी के कारण हम केवल दो समानताओं का उल्लेख करेंगे।

पहला, नए नियम में "वचन" या "लोगोस" के रूप में मसीह का वर्णन केवल प्रकाशितवाक्य 19:13 और यूहन्ना 1:1, 14 में ही पाया जाता है। ऐसी भाषा शैली 1 यूहन्ना 1:1 में भी प्रकट होती है।

और दूसरा, प्रकाशितवाक्य 22:17 में यीशु का कथन "जो प्यासा हो वह आए" का समानांतर रूप नए नियम में यूहन्ना 7:37 में उल्लिखित केवल उसी के कथन "यदि कोई प्यासा हो, तो मेरे पास आए और पीए" में पाया जाता है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लेखक के रूप में प्रेरित यूहन्ना का समर्थन करनेवाले इन सभी मजबूत तर्कों के बावजूद भी तीसरी सदी से ही ऐसे आलोचक भी रहे हैं जिन्होंने उसके लेखक होने पर संदेह जताया है। उदाहरण के तौर पर, तीसरी सदी के बिशप, अलेक्जेंड्रिया के डायनायसिस ने दर्शाया कि प्रकाशितवाक्य के लेखक ने स्वयं का परिचय यूहन्ना के रूप में दिया है, जबकि यूहन्ना के सुसमाचार और पत्रियाँ के लेखक ने कभी अपना नाम नहीं बताया। डायनायसिस ने प्रकाशितवाक्य और यूहन्ना के की अन्य पुस्तकों के बीच की अन्य भिन्नताओं की ओर भी ध्यान आकर्षित किया, जैसे कि उनकी विभिन्न साहित्यिक शैलियाँ और यूनानी भाषा का प्रयोग। और कुछ आलोचक आज भी ऐसी ही आपत्तियों को दर्शाना जारी रखते हैं।

निस्संदेह, इसके कई अच्छे स्पष्टीकरण हैं कि क्यों एक ही लेखक ने ऐसी पुस्तकें लिखी हों जो एक दूसरे से भिन्न प्रतीत होती हैं। हैं। उदाहरण के तौर पर, यूहन्ना ने इस पुस्तक के साथ अपना नाम शायद इसलिए जोड़ा हो ताकि लोग इस बात के प्रति निश्चित रहें कि यह पुस्तक एक आधिकारिक स्रोत से आई है। या फिर शायद उसने अपना नाम इसलिए बताया हो क्योंकि उसे स्वयं मसीह ने यह आज्ञा दी थी कि वह यह पुस्तक सात विशेष कलीसियाओं तक पहुँचाए। और यूहन्ना द्वारा कुछ पुस्तकों में अपना नाम बताना ही इस निष्कर्ष का कारण नहीं बन जाता कि वह अपनी किसी भी पुस्तक में अपना नाम नहीं लिखेगा।

यही नहीं, प्रकाशितवाक्य और यूहन्ना की अन्य पुस्तकों के बीच की शैलीगत भिन्नता को भी सरलता से स्पष्ट किया जा सकता है। यूहन्ना द्वारा प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखित दर्शन उस प्रकाशन से बहुत ही भिन्न हैं जो उसने यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान प्राप्त किया था।

साथ ही, यूहन्ना द्वारा लिखी बाइबल की अन्य पुस्तकों के विपरीत प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को प्रकाशन-संबंधी शैली में लिखा गया है, और उसकी साहित्यक शैली और यूनानी भाषा के प्रयोग में आईं अधिकाँश भिन्नताओं का शायद यही कारण रहा होगा। ये भिन्नताएँ शायद लेखन के भिन्न उद्देश्यों के कारण और उसके विभिन्न मूल श्रोताओं के साथ उसके भिन्न-भिन्न संबंधों के कारण भी रही हों।

सारांश में, प्रेरित यूहन्ना के लेखक होने के साक्ष्य उन साक्ष्यों से कहीं अधिक हैं जो उसके लेखक होने के विरुद्ध दिए जाते हैं। इस कारण, इन अध्यायों में हम इस पारंपरिक दृष्टिकोण की पुष्टि करेंगे कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक प्रेरित यूहन्ना द्वारा लिखी गई है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लेखक के रूप में प्रेरित यूहन्ना के बारे में बात करने के बाद, आइए यूहन्ना के स्थान और अनुभव की ओर मुड़ें जब उसने यह पुस्तक लिखी थी।

स्थान और अनुभव

प्रकाशितवाक्य 1:9 के अनुसार यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को तब लिखा जब वह एजियन समुद्र के एक छोटे से टापू पतमुस पर था, जो इफिसुस से दक्षिण-पश्चिम की ओर लगभग चालीस मील की दूरी पर था। पतमुस एक चट्टानी और ऊजाड़ स्थान है, जहाँ बिल्कुल वृक्ष नहीं हैं। इसके उजाड़ होने के कारण यह ऐसे लोगों को सजा देने का अच्छा स्थान बन गया था जिन्हें रोमी साम्राज्य की शासन व्यवस्था के लिए खतरा समझा जाता था। और प्रकाशितवाक्य 1:9 बड़े बल के साथ दर्शाता है कि यूहन्ना को पतमुस टापू पर बंदी के रूप में भेजा गया था।

जब यूहन्ना उन कठोर परिस्थितियों को सह रहा था तो उसने मसीह से कई दर्शनों को प्राप्त किया। और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक यूहन्ना द्वारा इन्हीं दर्शनों का विवरण और उनकी व्याख्या है।

प्रकाशितवाक्य 1:10-11 में यूहन्ना के विवरण को सुनें :

> मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया, और अपने पीछे तुरही का सा बड़ा शब्द यह कहते सुना, “जो कुछ तू देखता है उसे पुस्तक में लिखकर सातों कलीसियाओं के पास भेज दे, अर्थात् इफिसुस, और स्मुरना, और पिरगमुन, और थूआतीरा, और सरदीस, और फिलदिलफिया, और लौदीकिया को।” **(प्रकाशितवाक्य 1:10-11)**

यहाँ और अन्य अनुच्छेदों जैसे प्रकाशितवाक्य 21:5 में, यूहन्ना ने स्पष्ट कर दिया कि उसने परमेश्वर से प्राप्त इस आज्ञा का पालन करते हुए यह पुस्तक लिखी थी। परमेश्वर उसे एक दर्शन दिखाने जा रहा था, और यूहन्ना को उसे लिखना था और एशिया माइनर की इन सातों कलीसियाओं को भेजना था।

यह जानते हुए कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक यूहन्ना को दिए गए अलौलिक दर्शन के फलस्वरूप आई है, कई व्याख्याकारों ने इस पुस्तक के लेखक के रूप में यूहन्ना के महत्व को धूमिल कर दिया है। आख़िरकार, यदि यह दर्शन का विवरण मात्र ही है, तो इसके लेखक का क्या महत्व है? कौन-से संभावित विचार यूहन्ना ने दिए होंगे?

> मेरे विचार से जब हम यह सोचते हैं कि कैसे पवित्र आत्मा ने परमेश्वर के वचन और मनुष्य के वचन के रूप में पवित्रशास्त्र को तैयार करने के लिए लोगों के साथ कार्य किया, तो हम उन दोनों बातों को कह सकते हैं कि ये मानवीय लेखक हैं जो बातों को सोच रहे हैं, और उसे स्पष्ट रूप से जोड़ रहे हैं जो कुछ वे समझ रहे हैं और जिसे वे बताना चाहते थे, और हम देख सकते हैं कि पवित्र आत्मा उन्हें आकार दे रहा है और उनके साथ काम कर रहा है और उन बातों में उनकी अगुवाई कर रहा है जो लिखी हुई हैं। कुछ विषय ऐसे हैं जिनमें पवित्र आत्मा सीधे ही लोगों को बताता है कि उन्हें क्या लिखना है, इसलिए हमारे पास कुछ प्रत्यक्ष रूप से बताए लेखन भी हैं, हमारे पास स्पष्ट ईश्वरीय-वाणी है। परंतु अन्य विषयों में, आपके पास मानवीय लेखक की साहित्यिक कला है, और वह बातों को इस प्रकार से सांस्कृतिक रूपों में व्यक्त करता है जिनमें वह चाहता है कि लोग उसे समझें, और परमेश्वर उन स्वतंत्र निर्णयों में काम कर रहा है ताकि उन्हें वैसा ही बनाए जैसा वह चाहता है। यह परमेश्वर के सर्वोच्च निर्देश और मानवीय जिम्मेदारी का सामंजस्य है। यह परमेश्वर का वचन है, यह मनुष्य का वचन है।

— डॉ. जॉन ई. मैक्किनले

> आत्मा भिन्न परिस्थितियों, भिन्न व्यक्तित्वों, भिन्न शब्दावली, प्रत्येक व्यक्ति के भिन्न ऐतिहासिक समयों का प्रयोग करता है, और उसे इस प्रकार से दर्शाता है कि उस विशेष सत्य को पूरी स्पष्टता के साथ प्रकट करे जिसे लेखक के तर्क के द्वारा प्रकट किया जा रहा है। और इसलिए हमारे पास पूरे पवित्रशास्त्र में वरदानों की पूरी बातचीत, और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, और ज्ञान, और लेखकों के अनुभव हैं, इसके साथ-साथ, हमारे पास पवित्र आत्मा के विशेष कार्य हैं जो इन सारे व्यक्तिगत वरदानों का प्रयोग करने में हमारी अगुवाई करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपने विधान में तैयार किया है — इन सारे व्यक्तिगत वरदानों का प्रयोग ऐसे किया जाना है जिससे ईश्वरीय प्रकाशन की एक पुस्तक तैयार हो जो ठीक वैसी हो जैसी वह चाहता है और उसमें साहित्यिक शैलियाँ, सभी ऐतिहासिक विवरण, और लेखकों की सारी पीड़ाएँ शामिल हों। यह सब कुछ लेखकों के सच्चे व्यक्तित्व और इतिहास के किसी भी प्रकार के हनन के बिना ईश्वरीय संचालन और ईश्वरीय प्रकाशन का विषय है।

— डॉ. थॉमस जे. नैटल्स

अध्याय 2 और 3 में दिए गए शब्दों के संभावित अपवाद के अतिरिक्त परमेश्वर ने यूहन्ना को दर्शन दिखाए, न कि वास्तविक शब्द बताए जिन्हें उसे लिखना था। सामान्य रूप से कहें तो, यूहन्ना ने अपने दर्शनों को अपने शब्दों में लिखा। अतः इस रूप में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक काफी हद तक यूहन्ना के सुसमाचार के समान है।

पहला, यूहन्ना ने यीशु के जीवन की घटनाओं को बारीकी से देखा। बाद में, उसने इन घटनाओं का अपने सुसमाचार में वर्णन किया, एक तरह से उसकी रचना ऐसे की गई कि उसके श्रोताओं की विशेष जरूरतों को पूरा करे। लगभग इसी तरह से, यूहन्ना ने उन दर्शनों को भी बारीकी से देखा जिनका वर्णन उसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में किया। फिर उसने अपने अनुभवों के सच्चे विवरण के रूप में अपनी पुस्तक लिखी। और जैसा कि हम इन अध्यायों में देखेंगे, यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के विवरणों को ऐसे रूपों में चुना और व्यवस्थित किया जिन्होंने उसके मूल श्रोताओं की आवश्यकताओं को संबोधित किया।

बाइबल की बाकी पुस्तकों के समान, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक भी परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई थी। पवित्र आत्मा ने यूहन्ना के काम का निरीक्षण किया ताकि जो कुछ भी वह लिखे वह सच्चा और आधिकारिक हो। परंतु जैसा कि हम इन सारे अध्यायों में देखेंगे, यूहन्ना अभी भी एक क्रियाशील, और विचारशील लेखक था। अध्याय 2 और 3 के पत्रों के अतिरिक्त यूहन्ना ने यीशु से किसी भी तरह की शाब्दिक बातों को प्राप्त नहीं किया। वह अपने दर्शन को याद रखने, उसे समझने और उसे अपने शब्दों में प्रस्तुत करने के प्रति जिम्मेदार था।

अब जबकि हमने यूहन्ना के उस स्थान और अनुभव पर विचार कर लिया है जब उसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा था, इसलिए आइए उस समय को देखें जब उसने इसे लिखा था।

समय

सुसमाचारिक व्याख्याकार आम तौर पर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लेखन के दो संभावित समयों में से एक की ओर संकेत करते हैं : या तो रोमी सम्राट नीरो के समय के दौरान का आरंभ का समय,

या फिर रोमी सम्राट डोमीशियन के समय के दौरान का बाद का समय। हम नीरो के समय से आरंभ करके इन दोनों समयों पर विचार करेंगे।

नीरो

रोमी सम्राट नीरो ने 54 ईस्वी से लेकर 68 ईस्वी तक शासन किया, और नीरो के शासन के समय का तर्क देनेवाले इतिहासकार प्रकाशितवाक्य के लेखन को उसके शासन के अंत की ओर रखने की प्रवृत्ति रखते हैं। नीरो के आरंभिक वर्षों में सक्षम सलाहकारों का उसके ऊपर बहुत प्रभाव था। परंतु जैसे-जैसे समय बीतता गया वैसे-वैसे उसका शासन नाटकीय ढंग से भ्रष्ट होता गया। नीरो 64 ईस्वी में रोम में लगी आग के लिए मसीहियों पर दोष लगाने के लिए, और इस दोष का प्रयोग करके बड़ी संख्या में रोम में रहनेवाले विश्वासियों को सताने के लिए कुख्यात है।

> सम्राट नीरो ने पहली सदी के मध्य में यह सताव मुख्यतः मसीहियों को बलि के बकरे बनाने के लिए किया। रोम नगर में आग लग गई थी, और सम्राट नीरो को शहरों के नवीनीकरण की परियोजनाओं के लिए जाना जाता था, और इस तरह से जब आग बहुत अधिक जगहों पर फ़ैल गई और जब अन्य सैनिकों ने आकर उन भवनों को खाली कराना शुरू किया जो कुछ लोगों के अनुसार अनावश्यक था, तो ऐसे कुछ लोग थे जिन्होंने महसूस किया कि शहरों के नवीनीकरण की परियोजना के कारण उनका नुकसान हुआ है, और यह सम्राट की गलती थी। इसलिए विद्रोह होने का खतरा बढ़ गया था। वह किसी को ढूँढ रहा था जिस पर वह उस आग का दोष लगा सके और उसने इसे मसीहियों के साथ जोड़ दिया। और इसके लिए मसीहियों को अलग-अलग तरीकों से यातनाएँ दी गईं ताकि उनसे बलपूर्वक स्वीकार करवाया जाए कि इस आग के पीछे उन्हीं का हाथ था।
>
> — डॉ. जेम्स डी. सिम्थ III

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के नीरो के शासनकाल के अंतिम वर्षों के दौरान लिखे जाने के तर्क तीन जानकारियों पर आधारित है। पहला मुख्य प्रमाण है यूहन्ना द्वारा सात राजाओं का उल्लेख।

प्रकाशितवाक्य 17 में यूहन्ना ने लाल रंगवाले एक पशु का वर्णन किया है जिसके सात सिर और दस सींग थे। और पद 9-11 में उसने कहा कि सात सिर सात राजाओं को दर्शाते हैं। अधिकांश व्याख्याकार सहमत हैं कि ये सात राजा रोमी सम्राट थे। यूलियुस कैसर को कई बार पहला रोमी सम्राट माना जाता है। उसके बाद औगुस्तुस, तिबिरियुस, कालिगुला, क्लौदियुस, नीरो, और गलबा आए। वास्तव में, प्रकाशितवाक्य 17:10 में हम इस बात का विवरण पाते हैं कि रोम का छठा सम्राट सत्ता में था जब यूहन्ना ने अपने दर्शन को प्राप्त किया था और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा था। इस पद ने कई व्याख्याकारों को यह निष्कर्ष निकालने में प्रेरित किया है कि यूहन्ना का प्रकाशन नीरो के शासनकाल में लिखा गया था।

इस बात का दूसरा मुख्य तर्क कि यूहन्ना ने नीरो के शासनकाल में इस पुस्तक को लिखा था, यूहन्ना के यहूदी मंदिर के उल्लेख से आता है। विशेषकर, यूहन्ना ने मंदिर का उल्लेख प्रकाशितवाक्य 11 में किया था, और कुछ विद्वान इसका यह अर्थ निकालते हैं कि यरूशलेम में यहूदी मंदिर उस समय भी खड़ा था जब प्रकाशितवाक्य को लिखा गया था। परंतु इतिहास दर्शाता है कि यरूशलेम का मंदिर 70 ईस्वी में, नीरो के शासन के समाप्त होने के दो वर्षों के बाद नष्ट किया गया था। अतः यदि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लिखे जाने के समय तक मंदिर खड़ा था, तो संभव है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक नीरो के शासनकाल में लिखी गई थी।

तीसरा कारण जो नीरो के समय में लिखे जाने की ओर संकेत कर सकता है, वह यह है कि यूहन्ना ने सताव के समय के दौरान इसे लिखा। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक बार-बार इस बात का उल्लेख करती है कि यूहन्ना के पाठक कष्टों का सामना कर रहे थे। हम इसे प्रकाशितवाक्य 1:9; 2:9, 10, 13; 6:9 और 20:4 में देखते हैं। और जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, नीरो मसीहियों पर होनेवाले सताव को बढ़ावा देने के लिए प्रचलित था। ऐसा करनेवाला वह एकमात्र रोमी सम्राट नहीं था, परंतु वह बड़े पैमाने पर ऐसा करने वाला पहला था, यद्यपि उसके सताव सामान्यतः रोम के आस-पास के क्षेत्र तक ही सीमित थे।

> रोमी सम्राट नीरो जिसने 54 ईस्वी से लेकर 68 ईस्वी तक शासन किया, एक बहुत ही क्रूर सम्राट के रूप में प्रचलित था। वह कई तरीकों से बहुत से लोगों को सताने के लिए भी प्रचलित था। उदाहरण के तौर पर, उसने अपने ही परिवार के सदस्यों को मार डाला था, और वह शायद मसीहियों को सतानेवाला पहला रोमी सम्राट था। उसने ऐसा कैसे किया? हमारे पास टैसीटस नाम का एक प्राचीन इतिहासकार है जो हमें बताता है कि कुछ मसीहियों को रोम में तारकोल में डुबोकर वास्तव में रोशनी देने के लिए जलाया गया था। कुछ को जंगली पशुओं की खाल में लपेटकर और जानवरों को खिलाया गया था, और कहा जाता है कि कुछ को तो क्रूसों के ऊपर कीलों से जड़ दिया गया था।
>
> — डॉ. ब्रैंडन क्रो

यद्यपि ऐसा कोई सटीक ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है कि नीरो के अधीन सताव रोम से बढ़कर साम्राज्य के अन्य भागों में फैला, फिर भी इसकी संभावना से इनकार भी नहीं किया जा सकता। अतः इसे नीरो के शासनकाल में लिखे जाने का समर्थन करने के रूप में भी देखा जा सकता है।

जबकि इसके नीरो के शासनकाल में लिखे जाने का समर्थन करने के तर्कों में कुछ लाभ अवश्य है, परंतु ये पूरी तरह से भरोसेमंद नहीं हैं। वास्तव में, इनके विरूद्ध कई आपत्तियाँ उठाई गई हैं।

सबसे पहले, यूलियुस कैसर वास्तव में एक सम्राट नहीं था। उसका उत्तराधिकारी औगुस्तुस इस पदवी का दावा करनेवाला पहला व्यक्ति था। अतः हो सकता है कि यूलियुस कैसर प्रकाशितवाक्य 17:9-11 में उल्लिखित सात राजाओं में से पहला राजा न हो।

दूसरा, जैसा कि हम देख चुके हैं, प्रकाशितवाक्य 11 मंदिर का उल्लेख करता है। परंतु प्रकाशितवाक्य 11:1-2 में यूहन्ना को बताया गया था कि केवल बाहरी आंगन को छोड़कर इस मंदिर को अन्यजातियों से बचाया जाएगा। इसके विपरीत, मत्ती 24:1-2 में स्वयं यीशु ने पहले से ही भविष्यवाणी कर दी थी कि अन्यजातियों के द्वारा यरूशलेम का मंदिर नाश कर दिया जाएगा। अतः यह सुनिश्चित करना कठिन है कि क्या प्रकाशिवाक्य 11 उसी मंदिर को दर्शाता है जिसे 70 ईस्वी में नाश कर दिया गया था।

तीसरा, जबकि यह संभव है कि नीरो का सताव अखाया तक फैल गया था, परंतु इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है कि ऐसा वास्तव में हुआ था। अतः मसीहियों पर हुए सताव के यूहन्ना के विवरणों को सीधे नीरो के साथ जोड़ना कठिन है। ऐसी समस्याओं के कारण अधिकांश सुसमाचारिक लोग प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लिखे जाने के बाद के समय को प्रमुखता देते हैं।

अब क्योंकि हमने नीरो के दिनों के समय से संबंधित तर्कों को देख लिया है, इसलिए आइए उन प्रमाणों को देखें जो सुझाव देते हैं कि यूहन्ना ने डोमीशियन के शासनकाल में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा था।

डोमीशियन

ऐसे विद्वान् जो प्रकाशितवाक्य के लेखन के बाद के समय का पक्ष लेते हैं, वे इसे रोमी सम्राट डोमीशियन के शासनकाल में लिखी गई दर्शाते हैं, जिसने 81 से 96 ईस्वी तक शासन किया था। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के इस समय के दौरान लिखे जाने के पक्ष में कम से कम चार कारणों को दर्शाया जा सकता है।

पहला, कई आरंभिक कलीसियाई पूर्वजों ने दर्शाया है कि यह पुस्तक इस समय में लिखी गई थी। उदाहरण के लिए, अपनी कृति अगेंस्ट हेरेसीज़ की पुस्तक 5, अध्याय 30, खंड 3 में आरंभिक कलीसियाई पूर्वज आयरेनियस ने बताया कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक "डोमीशियन के शासन के लगभग अंत में लिखी गई थी।" इस अध्याय में पहले हमने उल्लेख किया था कि आयरेनियस, पोलीकार्प का शिष्य था, और पोलीकार्प प्रेरित यूहन्ना का शिष्य था। इसलिए इस विषय पर उसकी गवाही पर भरोसा करने का वैध कारण है।

लेखन का यह समय दूसरी सदी के आरंभ के कुछ कलीसियाई पूर्वजों की गवाही के साथ भी मेल खाता है जैसे अलेक्जेंड्रिया का क्लेमेंट, जिसने दर्शाया कि यूहन्ना डोमीशियन की मृत्यु के बाद निर्वासन से मुक्त हुआ था।

इसके डोमीशियन के शासनकाल में लिखे जाने की ओर संकेत करने का दूसरा कारण सात राजाओं का वैसा ही उल्लेख है जिसका प्रयोग कुछ व्याख्याकार नीरो के शासनकाल में लिखे जाने के समय का समर्थन करने में करते हैं। जैसा कि हम देख चुके हैं, प्रकाशितवाक्य 17:9-11 में यूहन्ना ने स्पष्ट किया कि लाल रंग के पशु के सात सिर सात राजा थे। डोमीशियन के शासनकाल में लिखे जाने के समय का तर्क देनेवाले लोग कहते हैं कि सभी सातों राजाओं को कलीसिया के भंयकर सतानेवालों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अतः रोमी सम्राटों की गिनती करने की अपेक्षा, वे केवल उन्हीं सम्राटों को गिनते हैं जिन्होनें कलीसिया को बहुत अधिक सताया था।

इस हिसाब से कलिगुला पहला सम्राट था। उसने 37 से 41 ईस्वी तक शासन किया था। दूसरा क्लौदियुस था, जिसने 41 से 51 ईस्वी तक शासन किया था। तीसरा नीरो था, जिसने 54 से 68 ईस्वी तक शासन किया था। नीरो के बाद, तीन छोटे-छोटे सम्राट आए जिन पर ध्यान नहीं दिया गया है, क्योंकि उनके समय में कलीसिया पर कोई ज्यादा सताव नहीं हुआ। चौथा सम्राट जिसने कलीसिया को सताया वह वैसपासियन था, जिसने 69 से 79 ईस्वी तक शासन किया था। पाँचवाँ टाईटस था, जिसने 79 से 81 ईस्वी तक शासन किया था। और छठा सम्राट, जिसके शासन के दौरान प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखी गई होगी, डोमीशियन था, जिसने 81 से 96 ईस्वी तक शासन किया था।

तीसरा कारण जो इसके लेखन के समय को डोमीशियन के शासनकाल में दर्शाता है, वह है मसीहियों का सताया जाना।

> डोमीशियन वैसपासियन का पुत्र और टाईटस का भाई था। अब आपको इसके बारे में यह जानने की आवश्यकता है कि वैसपासियन और टाईटस व्यक्तिगत तौर पर 70 ईस्वी में यरूशलेम के पतन, और आरंभिक यहूदीवाद के अगुवों को जड़ से उखाड़ने और मसादा तक यहूदियों का लगातार पीछा करने, और मसादा पर आक्रमण करने और 72 ईस्वी में बड़ी संख्या में यूहदी जेलोतियों का सफाया करने के जिम्मेदार थे। अतः उस परिवार के बारे में कम से कम एक बात जो आप कह सकते हैं, वह यह है कि उनमें यहूदियों के प्रति कोई प्रेम नहीं था। इसलिए यह हैरानी की बात नहीं है कि डोमीशियन ऐसा सम्राट था जिसने ऐसे प्रत्येक समूह को सताया जिसे उसने यहूदी धर्म से निकला हुआ देखा। ऐसा लगता है कि सताव

> पूर्व-नियोजित होने की अपेक्षा अनियमित था। ऐसा लगता है कि यह पूरे साम्राज्य के स्तर पर फैले होने की अपेक्षा क्षेत्रीय था, परंतु फिर भी यह बहुत विद्वेषपूर्ण था।
>
> — डॉ. बेन विदरिंगटन III

> डोमीशियन हर किसी के पीछे पड़ा, और लोग उससे इतनी नफरत करते थे कि कुछ ही समय के बाद उन्होंने उसका नाम रंगशालाओं जैसे स्थानों से उखाड़ डाला जो उसे समर्पित थे, और वे लोग वास्तव में पूरे साम्राज्य में गए और उसके नाम को मिटा डाला, क्योंकि उससे बहुत नफरत की जाती थी। उससे नफरत क्यों की जाती थी? क्योंकि उसने अपने प्रति आते दिखनेवाले हर विरोध को कुचल डाला था।
>
> — डॉ. ब्रैंडन क्रो

> हमें यहूदियों के सताव के विषय में वास्तव में मसीहियों के सताव से अधिक जानकारी है, परंतु इसमें कोई संदेह नहीं है कि ये दोनों ही बहुत भयंकर थे, और उसके फलस्वरुप जो लोग प्रकाशितवाक्य के लेखन को पहली सदी के अंत में रखते हैं, वे महसूस करेंगे कि पशु या बड़ा दानव जिसके बारे में प्रकाशितवाक्य में कहा गया है, वास्तव में डोमीशियन है। वह तो नीरो से भी बढ़कर था, संभवतया पागल था, पूरा पागल था। वह ऐसा था जो अपनी आदतवश स्त्रियों और बौने लोगों को लड़ते हुए देखना पंसद करता था, वह कीड़ों को पकड़ लेता था और उन्हें सूई से भेदता रहता था — ये बातें उनके द्वारा लिखी गई हैं जिन्होंने उसे ऐसा करता हुआ देखा था — और अंततः उसे मार डाला गया, उसके अपने एक पुराने गुलाम ने उसे मार डाला जो उसके पास वापस आ गया था और उसने मौके को देखा और वह अपने आप को रोक नहीं पाया। अतः कई रूपों में उसमें राजकीय पागलपन की हद थी।
>
> — डॉ. जेम्स डी. सिम्थ III

कई इतिहासकारों के अनुसार, डोमीशियन ने रोम से बाहर की कलीसियाको पहले के किसी भी सम्राट से बहुत अधिक सताया था। उदाहरण के तौर पर, 96 ईस्वी में रोम के क्लेमेंट ने कुरिन्थियों को एक पत्र लिखा जिसमें उसने उनके ऊपर अचानक और लगातार आई विपत्तियों और परेशानियों का वर्णन किया। ये “विपत्तियाँ और परेशानियाँ” डोमीशियन के शासनकाल में मसीहियों पर किए गए सुनियोजित सताव को दर्शाती हैं। कहा जाता है कि वह मसीह के आगमन से डरता था। और यहाँ तक कहता है कि उसने अपने भतीजे, रोमी राजदूत फ्लेवियस क्लेमेंस को भी मार डाला, क्योंकि फ्लेवियस एक मसीही था।

प्रकाशितवाक्य के डोमीशियन के समय में लिखे जाने का सुझाव देने का चौथा कारण यह है कि डोमीशियन चाहता था सम्राट की आराधना की जाए।

> डोमीशियन के समय से हम यह बात भी जानते हैं कि सम्राट-आराधना की झूठी रीति बढती जा रही थी। और सम्राट-आराधना की झूठी रीति औगुस्तुस के समय से साम्राज्य के आरंभ से चली आ रही थी। परंतु जब आप डोमीशियन के समय तक पहुँचते हैं, तो वह ऐसी बातें कह रहा था, “जब तक मैं जीवित हूँ, तुम मेरी ही आराधना करो।” औगुस्तुस के विषय में कहें तो उसकी आराधना उसके मरने के

> बाद एक दैवीय मनुष्य के रूप में होती थी। परंतु जब आप पहली सदी के अंत में पहुँचते हैं, तो वे डोमीशियन जैसे जीवित सम्राट की आराधना कर रहे थे, या फिर उन्हें ऐसा करने के लिए कहा गया था। वह यह कहते हुए चलता था, "डेउस एट डोमीनुस नोस्टर, अर्थात् हमारे प्रभु और हमारे ईश्वर के रूप में केवल मेरी आराधना करो।" जो कहने का वही रूप है जिसका प्रयोग यूहन्ना के सुसमाचार के अंत में थोमा यीशु के लिए करता है, "मेरा प्रभु और मेरा परमेश्वर।" और इसी भाषाशैली का प्रयोग प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में भी लगातार किया गया है। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का संदर्भ वह समय है जब सम्राट-आराधना बढ़ रही थी और एशिया माइनर जैसे स्थानों में, जहाँ वे कलीसियाएँ थीं, मसीहियों पर सताव बढ़ता जा रहा था।
>
> — डॉ. बेन विदरिंगटन III

सम्राट-आराधना का विषय प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के कई भागों में प्रकट होता है। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य के 17:9-11 में जो पशु सात राजाओं को प्रस्तुत करता है, वह प्रकाशितवाक्य 13, 14, और 16 में भी लोगों से अपनी आराधना की मांग करता है। यह उद्देश्य दर्शा सकता है कि प्रकाशितवाक्य को ऐसे समय में लिखा गया था जब रोमी सम्राट ने मसीहियों से अपनी आराधना की मांग की थी।

इसका कोई प्रमाण नहीं है कि नीरो ने लोगों से अपनी आराधना की मांग की। परंतु डोमीशियन ने स्पष्ट रूप से ऐसा किया था। जब-जब मसीहियों ने "ईश्वर और प्रभु" होने के उसके दावे को मानने से इनकार किया, तब-तब उन्होंने उसके क्रोध का सामना किया। डोमीशियन अपने सारे पत्रों का आरंभ "हमारे प्रभु और ईश्वर के आदेश से" नामक वाक्यांश से करता था, और वह चाहता था कि उसकी प्रजा उसे वैसे ही संबोधित करे। उसने रोमी देवताओं के मंदिरों में अपनी सोने और चांदी की मूर्तियों को भी रखवा दिया था।

परंतु इस दृष्टिकोण की भी अपनी कमजोरियाँ हैं जो दर्शाता है कि यूहन्ना ने डोमीशियन के समय में इस पुस्तक को लिखा था। उदाहरण के लिए, यूहन्ना ने कभी नहीं कहा कि अध्याय 17 के सात राजा कलीसिया के भयंकर सतानेवाले थे। और उसने कभी 70 ईस्वी में हुए यरूशलेम के भौतिक मंदिर के विनाश का उल्लेख नहीं किया, जो कि डोमीशियन के समय तक हो चुका था।

यूहन्ना के द्वारा प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लिखे जाने के सटीक समय का निश्चितता के साथ पता नहीं लगाया जा सकता। परंतु ऐसा प्रतीत होता है कि इस दृष्टिकोण के लिए अधिक समर्थन है कि यह डोमीशियन के शासन के दौरान लिखी गई थी। ऐसे व्याख्याकार जो इस दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं, वे सामान्यतः इसके लेखन के समय को डोमीशियन के जीवन के अंत के निकट, अर्थात् यूहन्ना के पतमुस टापू से छूटने से ठीक पहले लगभग 95 ईस्वी के आस-पास रखते हैं।

इन अध्यायों में हमारी कोई भी व्याख्या प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लेखन के किसी भी सटीक समय पर केंद्रित नहीं होगी। इसकी अपेक्षा, हम इस तथ्य पर ध्यान देगें कि यह पहली सदी के अंतिम पचास वर्षों के दौरान कभी लिखी गई थी जब विश्वासियों को उनके विश्वास के कारण सताया जा रहा था, और उन पर सम्राट की आराधना करने का दबाव डाला जा रहा था।

प्रकाशितवाक्य के लेखक और लेखन के समय की जाँच करने के बाद, आइए इसके मूल श्रोताओं के विषय पर चर्चा करें।

श्रोता

यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य को स्पष्ट रूप से एशिया माइनर की सात कलीसियाओं को संबोधित किया, वह क्षेत्र अब पश्चिमी तुर्की का हिस्सा है। ये कलीसियाएँ इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन, थूआतीरा, सरदीस, फिलदिलफिया और लौदीकिया में स्थित थीं। प्रत्येक कलीसिया ने प्रोत्साहन को प्राप्त किया, जब आवश्यक हुआ, तो उनकी परिस्थिति के अनुसार ताड़ना को भी प्राप्त किया।

> प्रकाशितवाक्य का प्रमुख उद्देश्य, इसका प्रमुख संदेश सबसे पहले सातों कलीसियाओं को मसीह में उनकी दशा के बारे में जानकारी देना था। जैसे उसने दुःख उठाया और विजयी हुआ, वैसे ही वे भी दुःख उठाएँगी और विजयी होंगी। यही वह विषय है जो पूरी पुस्तक में प्रकट होता है। दूसरा यह है कि उन्हें अपने विश्वास और भरोसे को परमेश्वर की सर्वोच्चता, मसीही की सर्वोच्चता और आत्मा की सर्वोच्चता पर रखने की आवश्यकता है। क्योंकि मसीह को मार दिया गया था और वह फिर जी उठा था, इसलिए वह एक विजयी नायक है। वह एक विजयी सिंह है। वह विजयी है, और उसने दुष्ट पर विजय प्राप्त की है। इसलिए वह सर्वोच्च प्रभु है। परमेश्वर, मसीह और आत्मा सभी सर्वोच्च हैं, और इसलिए वे लोग अब परीक्षाओं के बीच, सताव के बीच, और झूठी शिक्षाओं के बीच परमेश्वर की सर्वोच्चता में विश्राम पा सकते हैं। उन्हें उस पर निर्भर रहने की आवश्यकता है क्योंकि वे भयंकर सताव, भयंकर परीक्षाओं, भयंकर परखों से होकर जा रहे हैं, और सांसारिक रीति का हिस्सा बनने के लिए उनका मूर्तिपूजा में पड़ना बहुत आसान है, परंतु इसकी अपेक्षा उन्हें परमेश्वर के सर्वोच्च हाथ पर निर्भर रहने की आवश्यकता है।
>
> — डॉ. बेंजामिन ग्लैड

इतिहासकार और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक स्पष्ट करती हैं कि इन नगरों में रहनेवाले मसीहियों ने हर तरह की परीक्षाओं और दबावों का सामना किया कि वे उन्हें सच्चे विश्वास से फेर दें। हर समय के अनेक मसीहियों के समान उन्होंने अपने विश्वास के साथ समझौता करने के दबाव को महसूस किया।

> नए नियम के लेखक हमें इस विषय में काफी व्यावहारिक परामर्श देते हैं कि हमें अपने जीवनों में कष्टों और दुखों का सामना कैसे करना है। निस्संदेह, हम इसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में विजय पाने के प्रोत्साहन, मसीह के साथ अपने संबंध को नकारने के बड़े दबाव में भी विश्वासयोग्य बने रहने, या फिर यीशु के प्रभुत्व के संबंध में आर्थिक जीवन या लैंगिक जीवन के साथ समझौता करने में देखते हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक और पूरे नए नियम में कुछ और व्यावहारिक बातें जो दुखों के बीच सहायता करती हैं, वे ये हैं, पहली अन्य विश्वासियों के साथ संगति करना है, संगति का महत्व वास्तव में न केवल आराधना करना है, बल्कि प्रोत्साहन देना, एक-दूसरे की आर्थिक सहायता करना भी है, सुरक्षा की यह भावना संगति में परमेश्वर के लोगों के रूप में एकत्रित होने के द्वारा आती है। एक और बात जो हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में एक स्रोत के रूप में देखते हैं वह विशेषकर विलाप के ये गीत हैं, जिन्हें हम पुराने नियम में भजन संहिता में देखते हैं, जिन्हें हम यीशु की वाणी में देखते हैं जब वह भजनों से उद्धृत करता है, जैसे क्रूस पर से भजन 22 में से, इसके साथ-साथ उन गीतों में भी जिन्हें हम

> प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में देखते हैं, वह है "कब तक"? कब तक, हे प्रभु, इन शहीदों को दुःख उठाना पड़ेगा? प्रभु, तू कब आएगा और अपने लोगों को छुटकारा देगा? विलाप वास्तव में न्याय की भावना के विषय में है, और हम जानते हैं कि न्याय की वह भावना परमेश्वर के चरित्र में स्थापित है, क्योंकि प्रभु न्यायी है। हम अधर्मी परिस्थितियों पर प्रश्न उठाते हैं और उसके छुटकारे और उद्धार की लालसा करते हैं। अतः मैं परमेश्वर के लोगों के रूप में विश्वासियों की संगति में और विलाप की भाषा में कष्टों और दुखों का सामना करने में, तथा परीक्षाओं में भी दो बहुत ही महत्वपूर्ण स्रोतों, अर्थात् व्यावहारिक स्त्रोतों को देखता हूँ।
>
> — डॉ. ग्रेग पैरी

एशिया माईनर की कलीसियाओं ने अपनी मान्यताओं और क्रियाओं से समझौता करने के विषय में दबाव के कई स्रोतों का सामना किया। परंतु इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए हम उन चार समस्याओं पर ध्यान देगें जो उनकी परिस्थितियों को दर्शाती हैं।

व्यापार संघ

पहला, मूर्तिपूजक व्यापार संघों ने मसीहियों पर झूठे देवताओं की आराधना करने का दबाव डाला। पहली सदी में, व्यापार संघ पूरे एशिया माईनर में पाए जाते थे। ये मजदूरों और पेशेवर लोगों के संघ थे जो कि आर्थिक उद्देश्यों के लिए संगठित हुए थे। मसीहियों सहित सब लोगों को इन व्यापार संघों से जुड़ना जरुरी था यदि वे अपने समुदायों में अच्छा व्यापार करने की आशा करते थे। इस सामाजिक क्रिया ने मसीह के अनुयायियों के सामने एक गंभीर चुनौती रखी, क्योंकि प्रत्येक संघ का एक संरक्षक देवता था, और संघ के सदस्यों से अपेक्षा की जाती थी कि वे उस देवता के प्रति अपनी निष्ठा दिखाएँ। जो मसीही संघ के संरक्षक देवता के प्रति निष्ठा दिखाने से इनकार कर देते थे, उन्हें संघ के सदस्यों के साथ व्यापार करने से बहिष्कृत कर दिया जाता था।

यहूदी समुदाय

समझौता करने के लिए दूसरा दबाव यहूदी समुदायों से आया जो पहली सदी में पूरे एशिया माईनर में फैले हुए थे। अधिकतर रोमी साम्राज्य में धर्म का पालन केवल उन्हीं देशों में किया जा सकता था जहाँ से उनका उद्‌गम हुआ था। इस कानून का एक महत्वपूर्ण अपवाद केवल यहूदी धर्म ही था। एशिया माईनर के अधिकांश मुख्य शहरों में यहूदी आराधनालय क्रियाशील थे। शुरू में तो रोमियों ने मसीहियत को यहूदी धर्म के एक समूह के रूप में देखा था, जिसके परिणामस्वरूप मसीहियत का पालन भी कानूनी तौर पर संपूर्ण साम्राज्य में किया जा सका। परंतु जब यहूदियों ने स्वयं को मसीही विश्वासियों से अलग करना आरंभ किया तो मसीहियत ने साम्राज्य के अधिकांश भाग में अपने वैधानिक स्तर को खो दिया, जिसके कारण मसीही प्रशासन की ओर से दंड और सताव के खतरे में आ पड़े। परिणामस्वरूप, मसीहियों ने यहूदी धर्म के समान बनने, और यहाँ तक कि मसीह में अपने विश्वास को भी त्याग देने के दबाव को महसूस किया।

रोमी प्रशासन

सच्चे मसीही विश्वास के साथ समझौता करने का तीसरा दबाव रोमी प्रशासन की ओर से आया, जिसने मांग की कि मसीही सम्राट और रोमी देवताओं की आराधना करें। क्योंकि यहूदी समाज ने मसीही कलीसिया को ठुकरा दिया था, इसलिए प्रशासन ने मसीहियों से मांग की कि वे रोमी देवताओं की

सार्वजनिक आराधना में शामिल हों। और डोमीशियन के दिनों में तो इसमें यह स्वीकारोक्ति भी शामिल थी कि सम्राट एक ईश्वर है। यदि मसीही इस मूर्तिपूजा में शामिल होने से इनकार कर देते थे तो उन पर नास्तिक होने का दोष लगाया जा सकता था — यह एक ऐसा अपराध था जिसके परिणाम बहुत भयंकर थे, और यह मृत्युदंड भी हो सकता था। अपनी भौतिक सुरक्षा के लिए बहुत से मसीहियों ने इस झूठी आराधना में शामिल होने के दबाव को महसूस किया।

स्वच्छंद मसीही

दुखद रूप से, समझौता करने के कलीसिया के बाहर से आए दबावों के अतिरिक्त चौथा दबाव वास्तव में स्वच्छंद मसीहियों की ओर से आया। बाइबल हमें एशिया माईनर की कलीसियाओं की समस्याओं के बारे में बहुत से विवरण नहीं देती है। परंतु प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में कलीसियाओं को लिखे गए पत्र मसीही समुदाय के भीतर के लोगों द्वारा उत्पन्न की गईं कई समस्याओं का वर्णन करते हैं। उदाहरण के तौर पर, प्रकाशितवाक्य 2:14 में बिलाम की अनैतिक शिक्षाओं की ओर संकेत किया गया है। प्रकाशितवाक्य 2:6, 15 में नीकुलइयों नामक समूह की निंदा की गई है। और प्रकाशितवाक्य 2:20 में इजेबेल नामक एक झूठी भविष्यवक्तिन का उल्लेख किया गया है।

यही नहीं, ऐसा प्रतीत होता है कि ये स्वच्छंद मसीही अन्य मसीहियों पर भी अपनी गलत रीतियों में शामिल होने का दबाव बना रहे थे। परंतु सभी स्वच्छंद मसीही इन झूठे समूहों में शामिल नहीं हुए थे। कुछ ने तो ऐसे ही अपने विश्वास को त्यागकर उन मूर्तिपूजक धर्मों को फिर से अपना लिया था जो उनके चारों ओर थे। एक रूचिकर अभिलेख प्लिनी दी यंगर से मिलता है, जो 111 से 113 ईस्वी तक पुन्तुस और बिथुनिया का राज्यपाल था।

सुनिए प्लिनी ने रोमी सम्राट टारजन को क्या लिखा था :

> गुप्त सूचना देनेवाले द्वारा बताए गए अन्य लोगों ने मान लिया था कि वे मसीही थे, परंतु बाद में उन्होंने इस बात का खंडन कर दिया, इससे यह लगता है कि वे कभी मसीही थे परंतु अब नहीं हैं . . . कुछ ने तो यहाँ तक कहा कि पच्चीस वर्ष पहले। उन सबने आपकी मूर्ति और देवताओं की मूर्तियों की आराधना की, और मसीह की निंदा की।

प्रत्येक युग में मसीही विचार, वचन और कार्य में मसीह के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता में समझौता करने के दबावों का सामना करते हैं। संसार के कई क्षेत्रों में मसीहियत अब भी एक असंवैधानिक धर्म है। विश्वासयोग्य मसीहियों को कैद होने, और कुछ विषयों में मार डाले जाने का जोखिम उठाकर गुप्त में आराधना के लिए एकत्रित होना पड़ता है। उन पर बौद्धिक दबाव भी रहता है। सांसारिक विद्वान, मित्र और परिवार अक्सर मसीहियत को एक ऐसा अज्ञानी धर्म बताकर उसका मजाक उड़ाते हैं जिसका विरोध विज्ञान के द्वारा होता है। व्यापार में सफलता प्राप्त करने के लिए, या फिर समाज के अन्यायी बरताव से बचने के लिए भी अपने व्यवहार और मान्यताओं के साथ समझौता करने का दबाव हो सकता है। और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ऐसी परिस्थितियों को संबोधित करती है। इसका संदेश यह है कि यीशु ही सर्वोच्च राजा है, और कि अंततः वह सब बातों को ठीक करने के लिए वापस आएगा। और जब वह आएगा, तो वह उन सब को प्रतिफल देगा जो उसके प्रति विश्वासयोग्य रहे हैं।

प्रकाशितवाक्य के ऐतिहासिक परिदृश्य की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, हम अब इसकी धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करने के लिए तैयार हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि

विस्तृत रूप में कहें तो, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक बाइबल की उस प्रत्येक पुस्तक के धर्मविज्ञान की पुष्टि करती है जो उससे पहले लिखी गई थी। यूहन्ना बाइबल के पूर्व के लेखनों पर बहुत अधिक निर्भर रहा, और उसने अपेक्षा की कि उसके पाठक भी उनसे परिचित हों।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि का वर्णन कई रूपों में किया जा सकता है। परंतु इस अध्याय में हम इसकी तीन सबसे अधिक मुख्य धारणाओं पर ध्यान देंगे : पहली, पवित्रशास्त्र का युगांत-विज्ञान या "अंत के दिन" से संबंधित धर्मशिक्षा; दूसरी, वाचा की धारणा; और तीसरी, बाइबल के भविष्यवक्ताओं की भूमिका। आइए सबसे पहले युगांत-विज्ञान की धर्मशिक्षा को देखें।

युगांत-विज्ञान

यूहन्ना के समय में, आरंभिक कलीसिया बहुत बड़े तनाव का अनुभव कर रही थी क्योंकि यीशु अब तक अपने कार्य को पूरा करने के लिए वापस नहीं आया था। अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान यीशु ने इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरणों का आरंभ करने के द्वारा प्रत्येक जाति के पास उद्धार पहुँचाना आरंभ कर दिया था। परंतु जिस समय यूहन्ना ने अपनी पुस्तक लिखी, तब तक यीशु को गए आधी सदी हो गई थी, और कुछ विश्वासी संदेह करने लग गए थे कि क्या वह वापस आएगा भी या नहीं। अतः यूहन्ना द्वारा पुस्तक लिखने का एक कारण अपने पाठकों को इस बात के प्रति पुनः आश्वस्त करना भी था कि यीशु अपने राज्य के निर्माण के लिए कार्य कर रहा है, और वह उस प्रत्येक प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए भविष्य में अवश्य लौटेगा जो बाइबल ने उसके विषय में की है। दूसरे शब्दों में, यूहन्ना ने युगांत-विज्ञान—अंत के दिनों की घटनाओं के विषय में बाइबल की शिक्षा— से संबंधित बाइबल की धर्मशिक्षा को स्पष्ट किया।

शब्द युगांत-विज्ञान का अर्थ यह है, "अंत के समयों का अध्ययन या अंत की बातों का अध्ययन।" यह नए नियम के यूनानी शब्द ऐसखाटोस से आता है, जिसका सामान्यतः अर्थ "अंत" है। पारंपरिक रूप से शब्द "युगांत-विज्ञान" का प्रयोग मुख्यतः मसीह के दूसरे आगमन के विषय में बाइबल की शिक्षा के लिए किया जाता है। परंतु हाल ही के बाइबल के विद्वानों ने शब्द "युगांत-विज्ञान" का प्रयोग मसीह के पहले आगमन से लेकर उसके पुनरागमन की संपूर्ण समयाविधि के चरम चरित्र के लिए किया है। युगांत-विज्ञान का यह विस्तृत दृष्टिकोण उस सच्चाई के साथ मेल खाता है जिसे इब्रानियों 1:2 और 1 पतरस 1:20 जैसे अनुच्छेद पूरे नए नियम की अवधि को अंत के दिनों या फिर अंत के समयों के बारे में दर्शाते हैं।

> कुछ धर्मविज्ञानी मसीह के पहले आगमन और उसके दूसरे आगमन के बीच के समय का वर्णन अंत के दिनों के रूप में करते हैं। वे उस पूर्ण समय का वर्णन अंत के दिनों के रूप में करते हैं क्योंकि मसीह का पहला आगमन अंत समयों का आरंभ है, और इसलिए धर्मविज्ञानी कभी-कभी आरंभ हुआ युगांत या फिर "पहले से ही, परंतु अभी नहीं" कहते हैं। क्रूस पर अपनी निर्णायक विजय और अपने पुनरुत्थान में प्रमाणिकता के साथ मसीह के पहले आगमन में आपके पास उन अंतिम प्रतिज्ञाओं के पूरे होने का बयाना, या निश्चय, या स्थापना है। वे अंतिम प्रतिज्ञाएँ अभी हमारे अनुभव का पूरी तरह से हिस्सा नहीं बनी हैं, इसलिए हम महिमामय नहीं हुए हैं, परंतु जिस क्षण मसीह आएगा और क्रूस पर किए गए प्रायश्चित के कार्य को निर्णायक रूप से पूरा करेगा, तो इसका परिणाम निश्चित होगा। परिणाम निश्चित है। इस बात का कोई मतलब नहीं निकलता कि अंतिम

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> परिणाम के विषय में कोई वाद-विवाद हो या फिर वह झपटने के लिए हो, या फिर यह कि यह परमेश्वर के मन में अस्पष्ट रूप में हो। और जबकि परमेश्वर की छुटकारे की योजना में अब भी ऐसी बातें है जिनका विश्वासियों के द्वारा अनुभव किया जाना अभी बाकी है, फिर भी उस अंतिम पूर्णता के बयाने का निश्चय उसी समय हो गया था जब क्रूस पर मसीह ने विजय— या मैं कहूँ तो अनुमोदन— प्राप्त की थी और जब उसका पुनरुत्थान हुआ था। और इसलिए एक कारण यह है, या मुख्य कारण यह है कि धर्मविज्ञानी मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच उसके कार्य के छुटकारे के विधान के पहलुओं को अलग-अलग करके बता सकते हैं, और साथ ही उसे एक साथ जोड़कर अंतिम दिनों के रूप में भी बता सकते हैं। हम अंतिम क्षणों में रह रहे हैं, जिनमें क्रूस पर पूर्ण की गई मसीह की अंतिम विजय कार्यरत है।
>
> — डॉ. रार्बट जी. लिस्टर

यह समझने के लिए कि कैसे नए नियम के लेखकों ने अंत के दिनों को समझा, पुराने नियम की शिक्षाओं से आंरभ करना सहायक होता है। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने पहले से ही बताया था कि भविष्य का मसीहा या मसीह विदेशी शासन की तानाशाही का अंत करेगा, और पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को लेकर आएगा।

जैसा कि हम दानिय्येल 2:44 में पढ़ते हैं :

> उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन् वह उन सब राज्यों को चूर चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा। (दानिय्येल 2:44)

इस पद में, दानिय्येल ने सिखाया कि संपूर्ण पृथ्वी पर परमेश्वर के अनंत राज्य की स्थापना करने के लिए परमेश्वर का राज्य विरोधी राष्ट्रों और शासकों को कुचल डालेगा। और दानिय्येल 7:13-14 में भविष्यवक्ता यह कहते हुए आगे बढ़ता है कि यह राज्य मनुष्य के पुत्र के कार्य के द्वारा आएगा, जिसे मसीहा या मसीह के नाम से भी जाना जाता है।

भविष्यवाणी के ऐसे अनुच्छेदों ने जैसे दानिय्येल की पुस्तक में पाए जाते हैं, पहली सदी में यहूदी धर्मविज्ञानियों को प्रेरित किया कि वे इतिहास को दो बड़े युगों में बाँटें : पाप, दुःख और मृत्यु का यह युग; और आने वाला युग, जब परमेश्वर अपने शत्रुओं को पूरी तरह से नाश कर देगा, और अंततः अपने लोगों को आशीष देगा।

दानियय्येल के बाद की सदियों में, इस्राएल मूर्तिपूजक साम्राज्यों और विदेशी शासकों के अधीन लगातार संघर्ष करता रहा। और यहूदी धर्मविज्ञानी बड़ी लालसा के साथ मसीह के आगमन की प्रतीक्षा करते रहे कि वह इस युग का अंत करे और आने वाले युग को लेकर आए।

> यह स्पष्ट है कि परमेश्वर वर्तमान में पुराने नियम के अपने लोगों के साथ कार्य कर रहा है, परंतु वह हमेशा इस रीति करता है कि राजा के आगमन, मसीहा के आगमन, अंतिम याजक, भविष्यवक्ता, और राजा की बाट जोहता है। संपूर्ण पुराना नियम इस विशेष व्यक्ति और घटना की बाट जोह रहा है। जब हम नए नियम में पहुँचते हैं, तो हम पाते हैं कि नए नियम के लेखक इस वास्तविकता से चकित हो जाते हैं कि जिसका वे अपने जीवन में सामना कर रहे हैं वह वास्तव में

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> उन सब बातों की पूर्णता है जिसकी भविष्यवाणी पुराने नियम ने की है। और यह न केवल अप्रत्यक्ष है, बल्कि नए नियम में स्पष्ट है कि उनके पास इस संसार के इतिहास का दृष्टिकोण वास्तव में दो भागों में है : एक भविष्यवाणी का है और दूसरा पूर्णता का है।
>
> — डॉ. डेविड बी. गार्नर

स्वयं यीशु भी अपने प्रचार में इतिहास के मूलभूत दो-युगी दृष्टिकोण पर लगातार निर्भर रहा। उदाहरण के तौर पर, उसने मत्ती 12:32, मरकुस 10:29-30, और लूका 20:34-35 जैसे स्थानों पर इस युग और आने वाले युग के बारे में बात की। परंतु यीशु ने दो युगों पर एक नए दृष्टिकोण का परिचय भी कराया। एक ओर, उसने भविष्य के युग के रूप में आने वाले युग का उल्लेख करना जारी रखा। परंतु दूसरी ओर, उसने अपने समय में ही परमेश्वर के राज्य के आने के बारे में बात की। दूसरे शब्दों में, उसने सिखाया कि उसके समय में इतिहास के दोनों युग एक दूसरे के समय में आना आरंभ हो गए थे। आने वाला युग आरंभ हो चुका था जबकि वर्तमान युग या यह युग अभी समाप्त नहीं हुआ था। यीशु के अनुसार, विश्वासी पहले से परमेश्वर के राज्य में रहते हैं, और पहले ही से उसकी कई आशीषों का आनंद ले रहे हैं।

मत्ती 12:28 में यीशु के शब्दों को सुनिए :

> यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है। (मत्ती 12:28)

दुष्टात्माओं की शक्तियों पर यीशु की विजय ने प्रमाणित किया कि उसने पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण को आरंभ या उद्घाटित कर दिया था।

> नए नियम में ऐसे कई अनुच्छेद हैं जो अंत के दिनों के बारे में बात करते हैं, और वास्तव में ये सभी अनुच्छेद संदर्भ में पहली सदी में ही अंत के दिनों को आरंभ कर देते हैं। उदाहरण के तौर पर, जब पतरस प्रेरितों के काम 2:17 में योएल के शब्दों को उद्धृत करता है, तो वह कहता है, "अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा।" यहाँ वह उन घटनाओं के विषय में कह रहा है जो पिंतेकुस्त के दिन उस समय हो रही थीं। इसलिए आरंभिक मसीहियों ने वह समझ लिया जो आधुनिक मसीही कई बार भूल जाते हैं, और वह यह है कि राज्य न केवल भविष्य का है, बल्कि यह भी है कि क्योंकि जो राजा आने वाला था, वह पहले ही आ चुका है, इसलिए भविष्य भी इतिहास में आ चुका है। और इसलिए आपके पास नए नियम में ऐसे अनुच्छेद हैं, जैसे गलातियों 1:4, कि उसने हमें वर्तमान बुरे संसार से छुड़ा दिया है; या 1 कुरिन्थियों 2:9,10 जहाँ पौलुस यह कहता है, "जो बातें आँख ने नहीं देखीं और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं।" या 2 कुरिन्थियों और इफिसियों 1 में वह एक शब्द का प्रयोग करता है जिसे अक्सर व्यापारिक प्रलेखों में बयाने के रूप में पाया जाता है। वह कहता है कि हमने आत्मा को प्राप्त करने के द्वारा भविष्य की अपनी मीरास की पहली किस्त प्राप्त कर ली है। हमने भविष्य के संसार का स्वाद अभी से चख लिया है, क्योंकि हम न केवल भविष्य के पुनरुत्थान और भविष्य के मसीहा, भविष्य के एक राजा की बाट जोह रहे हैं, बल्कि हम एक ऐसे राजा की बाट भी जोह रहे हैं,

> जो पहले ही आ चुका है, जो पहले ही मृतकों में से जी उठा है, और इसलिए है हमने तो पहले से ही स्वाद चख लिया है, और हमें भविष्य के युग के लोगों के समान जीना है। हमें इस वर्तमान संसार में भविष्य के संसार के लिए जीना है, ताकि हम संसार को इस बात का पहले से स्वाद चखा दें कि स्वर्ग कैसा होगा।
>
> — डॉ. क्रेग एस. कीनर

मसीह की पृथ्वी पर की सेवकाई के द्वारा परमेश्वर अपने शत्रुओं को अंतिम पराजय की ओर, तथा अपने लोगों को अंतिम आशीषों की ओर ला रहा था। उसका राज्य इस बुरे संसार में प्रवेश कर रहा था। यह परमेश्वर के लोगों को छुड़ा रहा था और उनकी भविष्य की आशीषों को सुनिश्चित कर रहा था। और जैसा कि हमने अभी-अभी मत्ती 12:28 में पढ़ा है, बचाव का यह कार्य मसीह के समय से ही आरंभ हो गया था। हम इसी विषय को लूका 16:16; 17:20-21 और यूहन्ना 3:3 में देखते हैं। इस वर्तमान समय में राज्य लगातार बढ़ता जा रहा है, जैसे कि हम मत्ती 13:24-30; 36-43 और लूका 19:11-27 में देखते हैं। और इस राज्य की पूर्णता भविष्य में होगी, जब मसीह का पुनरागमन होगा, जैसे कि यीशु ने मत्ती 16:27-28; 24:44-51, और 25:31-46 में सिखाया है।

युगांत-विज्ञान का यह दो-युगी दृष्टिकोण विशेषकर प्रेरित पौलुस के लेखनों में स्पष्ट दिखाई देता है। एक ओर, उसने पुष्टि की कि पाप और मृत्यु का यह वर्तमान संसार अब भी उपस्थित है। उदाहरण के लिए, उसने 2 कुरिन्थियों 4:4 में शैतान को "इस संसार का ईश्वर" कहा है। और उसने 1 कुरिन्थियों 1:20 में मूर्तिपूजक दार्शनिकों को "इस संसार का विवादी" कहा है। यही नहीं, पौलुस ने उस भविष्य के संसार के लिए "आने वाले समयों" की अभिव्यक्ति का प्रयोग किया है जब मनुष्यजाति को अंतिम दंड और आशीषें प्रदान की जाएँगी। हम यह इफिसियों 2:7 और 1 तीमुथियुस 6:19 जैसे स्थानों में देखते हैं। और उसने इफिसियों 1:21 में इन दोनों युगों की विपरीतता को स्पष्ट रूप से दिखाया है।

दूसरी ओर, पौलुस ने यह भी सिखाया कि एक भाव में आने वाला युग पहले से ही आ चुका है। उदाहरण के तौर पर, 1 कुरिन्थियों 10:11 में उसने लिखा कि मसीह में युगों की पूर्णता हो गई है। और कुलुस्सियों 1:13-14 में उसने कहा कि विश्वासी पहले से ही मसीह के राज्य में लाए जा चुके हैं।

यीशु और पौलुस द्वारा सिखाए गए युगांत-विज्ञान के दृष्टिकोण को कई बार "आरंभ हुआ युगांत" कहा जाता है, क्योंकि यह कहता है कि आने वाला युग आरंभ या उद्घाटित हो चुका है, परंतु यह अब भी अपनी पूर्णता में नहीं आया है। यीशु ने अपने पहले आगमन के दौरान परमेश्वर के राज्य का आरंभ कर दिया था, परंतु उसने इस वर्तमान युग को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया। और उस समय से ही, दोनों ही युगों के पहलू एक दूसरे के साथ उपस्थित रहे हैं। परिणामस्वरुप, विश्वासी पहले से ही आने वाले युग की कुछ आशीषों का अनुभव कर रहे हैं। परंतु हम तब तक इसकी संपूर्ण आशीषों का अनुभव नहीं करेंगे जब तक आने वाला युग मसीह के आगमन पर समाप्त नहीं हो जाता।

यहूदी युगांत-विज्ञान के अनुसार मसीहा को तब पाप और मृत्यु के वर्तमान युग को इसके संपूर्ण अंत की ओर लाना था जब वह आने वाले युग को लेकर आया था। परंतु यीशु ने ऐसा नहीं किया, और इससे कई लोग असमंजस में पड़ गए कि क्या वह वास्तव में मसीहा था या नहीं। यही एक कारण था कि नए नियम के लेखकों ने इस बात को समझाने में बड़ा परिश्रम किया कि परमेश्वर का राज्य विभिन्न चरणों में आता है। हाँ, यह परिवर्तन चकित करनेवाला था। परंतु यीशु के सामर्थी आश्चर्यकर्म और उसकी गवाही इस बात को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त थी कि वह सच कहा रहा था, और कि परमेश्वर वास्तव में एक अनपेक्षित रूप में राज्य को लाना चाहता था। जब यीशु आएगा, तो यह बुरा युग पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा, और आने वाला युग अपनी पूर्णता में आ जाएगा। परंतु तब तक दोनो युगों के पहलू एक दूसरे के साथ लगातार उपस्थित रहेंगे।

परंतु युगांत के इस दृष्टिकोण ने यूहन्ना को कैसे प्रभावित किया जब उसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखी? और धर्मविज्ञान का यह विशेष बिंदु उसके और उसके श्रोताओं के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों था?

उस समय के दौरान जब यूहन्ना प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिख रहा था, तो एशिया माईनर की कलीसियाएँ अपनी मान्यताओं में आई कथित असंगति के साथ संघर्ष कर रही थीं। एक ओर, उनका विश्वास था कि परमेश्वर इतिहास पर शासन करता है, और यह कि मसीह ने इस वर्तमान बुरे संसार पर विजय प्राप्त कर ली थी। यीशु ने उस पर विश्वास करनेवाले सब लोगों के उद्धारकर्ता के रूप में आकर पुराने नियम की आशाओं को पूरा कर दिया था।

परंतु दूसरी ओर, एशिया माईनर की कलीसियाओं को इस वास्तविकता से भी निपटना था कि उनके समय के संसार में अभी भी बुराई कार्यरत थी। परिणामस्वरूप, उन्होंने ऐसे कुछ बहुत ही कठिन प्रश्नों का सामना किया : "यदि उद्धार मसीह के द्वारा आ गया है, तो फिर भी संसार मसीहियों को पाप करने के लिए परीक्षा में क्यों डालता है?" यदि मसीह राज्य करता है, तो वह हमें सताव से क्यों नहीं बचाता है?" और निस्संदेह, "इन सारी परीक्षाओं का अंत कैसे और कब होगा?" किसी न किसी रूप में ये सारे प्रश्न युगांत-विज्ञान से संबंधित हैं। और ये सटीक रूप से ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक देती है।

यह स्पष्ट है कि यूहन्ना अंत के दिनों पर आधारित नए नियम के दृष्टिकोण द्वारा रचित धर्मवैज्ञानिक तनाव से अवगत था। और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के द्वारा उसका एक लक्ष्य इसका सामना करने में मसीहियों की सहायता करना था। अपनी पूरी पुस्तक में उसने अपने पाठकों को उत्साहित किया कि वे इस तनाव को दो विजयों के प्रकाश में देखें। पहला, उसने उस विजय की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया जो मसीह ने इस वर्तमान संसार पर पहले से ही प्राप्त कर ली थी।

अपनी मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के द्वारा मसीह ने प्रत्येक सच्चे विश्वासी के आंतरिक, आत्मिक उद्धार को सुरक्षित कर दिया था। इस आरंभिक विजय का उल्लेख प्रकाशितवाक्य 1:18 जैसे स्थानों में किया गया है, जहाँ मसीह ने घोषणा की कि वह मृतकों में से जी उठा है और वह फिर कभी नहीं मरेगा, और साथ ही अध्याय 5 और 12 में भी, जो उस अधिकार और सामर्थ्य के बारे में बार-बार बात करते हैं जिसे मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा प्राप्त किया था।

यूहन्ना द्वारा प्रदर्शित दूसरी विजय वह अंतिम विजय थी जिसे मसीह तब प्राप्त करेगा जब उसका पुनरागमन होगा — अर्थात् वह विजय जिसका परिणाम परमेश्वर के शत्रुओं का संपूर्ण विनाश और सारी सृष्टि का नवीनीकरण होगा। यह अंतिम विजय प्रकाशिवाक्य 1:7, और 19 तथा 22 अध्यायों में पाई जाती है।

यूहन्ना चाहता था कि उसके मूल श्रोता जान लें कि यीशु मसीह ने वास्तव में पाप, दुःख और मृत्यु की शक्ति को ठीक वैसे ही पराजित कर दिया है, जैसे पुराने नियम में पहले से भविष्यवाणी की गई थी। और इस आधार पर, यूहन्ना ने भी अपने पाठकों इस बात पर भरोसा रखने के लिए उत्साहित किया कि यीशु परमेश्वर के न्याय और उद्धार को पूरा करने के लिए वापस आएगा।

> हमें यह सोचना है कि परमेश्वर के राज्य की अनपेक्षित देरी ने कैसे मूल श्रोताओं, अर्थात् प्रकाशितवाक्य के मूल पाठकों को प्रभावित किया। मसीह का स्वर्गारोहण हो गया था। मसीह का स्वर्गारोहण हो गया था। सुसमाचार इसकी गवाही देते हैं, प्रेरित इसकी गवाही दे रहे थे, और सुसमाचारों में ऐसी बातें मिलती हैं, और यहाँ तक कि प्रेरित पौलुस के लेखनों में भी ऐसी बातें लिखी हैं कि जिन्हें ऐसे समझा जा सकता है कि मसीह शीघ्र आएगा, और इसलिए पहली सदी के मसीही सार्वजनिक रूप से मसीह को अपना प्रभु मान रहे थे और सताव, कठिनाइयों का सामना कर

> रहे थे। यहाँ तक कि सामान्य मुश्किलों, या नियमित आर्थिक परेशानियों और विस्थापन में भी वे यह सोच रहे होंगे कि क्या यीशु के पुनरागमन की प्रतिज्ञा विफल हो गई है? और उन्हें परिस्थिति का प्रत्युत्तर इस प्रकार देना था : उन्हें यह जानते हुए विश्वास में दृढ़ खड़े रहना था कि मसीह ने विजय प्राप्त कर ली थी, मसीह जीत चुका था, और कि परमेश्वर प्रकाशितवाक्य 4 और 5 में प्रकट महान सिंहासन से ब्रह्मांड पर सर्वोच्च रूप से शासन कर रहा था, और कि परमेश्वर सिंहासन पर बैठा राज्य कर रहा था और कोई भी बात न केवल उसकी योग्यता से बाहर बल्कि बातों को नियंत्रित करने की उसकी इच्छा, अनुमति और सक्रिय मनसा से बाहर भी नहीं हो सकती थी। क्योंकि पहली सदी के विश्वासियों के दुखों के कारण और उनके द्वारा विश्वास को थामे रखने से ही लोग उस दृढ़ विश्वास की गवाही के द्वारा विजयी हुए मसीह के पास आएँगे।
>
> — रेव्ह. माईकल जे. ग्लोडो

युगांत-विज्ञान की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, हम अब प्रकाशितवाक्य की धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि के दूसरे पहलू की ओर मुड़ने को तैयार हैं : वाचा की बाइबल आधारित धारणा।

वाचा

यद्यपि शब्द "वाचा" प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में केवल एक बार ही आता है, परंतु पुराने नियम की वाचा की धारणा ने इस पुस्तक को बहुत ही महत्वपूर्ण तरीकों से आकार दिया है। इसने उन मूलभूत अपेक्षाओं को स्थापित किया जिन्हें परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के राज्य में अपने जीवनों से संबंधित रखना आवश्यक था। इसने उसके भविष्य के छुटकारे और आशीष की प्रतिज्ञा की। और इसने उन्हें उस प्रत्येक कठिनाई पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया जिनका उन्होंने सामना किया। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में वाचा की धारणा जिस भूमिका को अदा करती है उसे पहचानने में हमारी सहायता के लिए इस बात की पुनर्समीक्षा करना उपयोगी होगा कि यह विचार संपूर्ण पवित्रशास्त्र में कैसे विकसित हुआ।

जबकि परमेश्वर की प्रत्येक वाचा की अपनी ख़ास विशेषताएँ हैं, फिर भी एक त्रि-भागी नमूना सभी ईश्वरीय वाचाओं के चरित्र में पाया जाता है। पहला, प्रत्येक वाचा ने अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के बड़े उपकार को प्रकट किया। दूसरा, परमेश्वर ने अपने उपकार के आभारपूर्ण प्रत्युत्तर में उनसे विश्वासयोग्यता की अपेक्षा की। और तीसरा, परमेश्वर ने परिणामों की एक धर्मी पद्धति को स्थापित करने के द्वारा अपने राज्य को संचालित किया। विशेष रूप से, वे जो विश्वासयोग्य थे उन्होंने आशीषों को प्राप्त किया है, और जो अविश्वासयोग्य थे उन्होंने श्रापों को प्राप्त किया है।

दाऊद के साथ बांधी गई वाचा में — जिसका उल्लेख 2 शमूएल 7:1-17, भजन 89 और भजन 132 जैसे अनुच्छेदों में किया गया है — परमेश्वर ने दाऊद के राजवंश को अपने लोगों के लिए परमेश्वर की आशीषों और दंड के माध्यम के रूप में स्थापित किया। दाऊद की संतान परमेश्वर के वासल राजा थे, जो परमेश्वर के समक्ष संपूर्ण राज्य को प्रस्तुत करते थे। अन्य सब वाचाओं के समान परमेश्वर ने उपकार को प्रकट किया, विश्वासयोग्यता की अपेक्षा की और दाऊद के घराने को उसकी आशीषों और दंड के परिणामों को याद कराया। परंतु इस्राएल के इतिहास में बाद में दाऊद का वंश इतनी बुरी तरह से विफल रहा कि संपूर्ण इस्राएल राष्ट्र परमेश्वर के श्राप के अधीन बंधुआई में चला गया।

परंतु बंधुआई में भी इस्राएल के भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की कि अंत के दिनों में परमेश्वर दाऊद के धर्मी पुत्र के द्वारा अपनी वाचा को फिर से नया करेगा। यिर्मयाह भविष्यवक्ता ने यिर्मयाह 31:31 में इस नवीनीकरण का वर्णन नई वाचा के रूप में किया है।

नए नियम के अनुसार मसीह दाऊद का वह महान पुत्र है जो इस नई वाचा को पूरा करता है। यीशु मसीह पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के ऊपर राजा है। और परमेश्वर, अर्थात् महान राजा या सम्राट, ने यीशु और उसकी कलीसिया के साथ वाचा बाँधी है। यीशु में परमेश्वर के महानतम उपकार को प्रकट किया गया है। स्वयं मसीह ने हमारे बदले में विश्वासयोग्यता की सारी माँगों को पूरा किया है। जब वह हमारे बदले मरा तो उसने वाचा के अनंत श्रापों को सहा। अपने लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा की अनंत आशीषों को साझा करने के लिए वह तीसरे दिन फिर जी उठा। और वह अपने लोगों को नई सृष्टि में परमेश्वर की परम आशीषें प्रदान करने के लिए फिर से आने वाला है।

परमेश्वर की वाचा में हमेशा विश्वासयोग्य और अविश्वासयोग्य दोनों प्रकार के लोग शामिल रहे हैं। और यह मसीह के पुनरागमन तक चलता रहेगा। आदम और नूह के दिनों में संसार के लोगों में विश्वासी और अविश्वासी दोनों थे। अब्राहम, मूसा और दाऊद के समय में भी परमेश्वर के विशेष लोगों पर यही बात लागू होती थी। और नए नियम की कलीसियाओं में भी विश्वासी और अविश्वासी दोनों पाए जाते हैं।

कुछ लोग मसीह पर सच्चा उद्धारदायक विश्वास रखते थे, परंतु अन्य लोगों के साथ ऐसा नहीं था। इसलिए जब यूहन्ना ने एशिया माईनर की कलीसियाओं के लिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखी, तो वह यह जानता था कि उसके मूल पाठकों में से कुछ ही सच्चे विश्वासी थे। विश्वासी बड़ी उत्सुकतावश प्रतीक्षा कर रहे थे कि परमेश्वर आशीषों के साथ उनकी विश्वासयोग्यता का पुरस्कार दे। परंतु कलीसिया के भीतर अन्य लोग अपनी विश्वासयोग्यता में डगमगाने लगे थे, और वे परमेश्वर के श्रापों के अधीन आने के खतरे में पड़ गए थे। इस परिस्थिति के प्रत्युत्तर में यूहन्ना ने परमेश्वर के साथ बाँधी वाचा में बिताए जाने वाले जीवन के चरित्र के विषय में श्रोताओं को याद कराया।

मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच हम परखे जाने के समय में रह रहे हैं, जहाँ हमारे हृदयों की सच्ची दशा प्रकट हो रही है। जब मसीह का पुनरागमन होगा, तो जो पूरी तरह से मसीह पर विश्वास करते हैं वे वाचाई आशीषों को प्राप्त करेंगे। परंतु जो विश्वास नहीं करते, वे उसके वाचाई श्रापों के अधीन आ जाएँगे।

सुनिए प्रकाशितवाक्य 3:16 में यीशु ने लौदीकिया की कलीसिया से क्या कहा :

> **इसलिये कि तू गुनगुना है, और न ठंडा है और न गर्म, मैं तुझे अपने मुँह में से उगलने पर हूँ। (प्रकाशितवाक्य 3:16)**

लौदीकिया की कलीसिया में से कम से कम कुछ लोग मसीह के सुसमाचार से पीछे हटने के खतरे में थे। इसलिए यूहन्ना ने उन्हें चेतावनी दी कि यदि वे विश्वासयोग्य नहीं रहते, तो वे परमेश्वर के वाचाई श्रापों के कारण दुःख उठाएँगे।

ये चेतावनियाँ वास्तव में अपने लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम का प्रसार था क्योंकि उसने युहन्ना के पाठकों को पश्चाताप करने का अवसर प्रदान किया। वास्तव में, हम प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में परमेश्वर के उपकार को देखते हैं। यह उसके लोगों के लिए उसके प्रेम में, हमारे लिए किए गए यीशु के बलिदान में, परमेश्वर के राज्य में, और मसीह के पुनरागमन में हमारी आशा में प्रकट होता है। परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया कि उसने अपने पुत्र को हमारे लिए दुःख उठाने को भेज दिया, और वह मृतकों में से जी उठा ताकि हम उसके राज्य में सदाकाल तक रह सकें। और उसका उपकार हमें बड़े कष्टों के बीच भी उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उत्साहित करे।

युगांत-विज्ञान और ईश्वरीय वाचाओं की इस समझ के साथ अब हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि के तीसरे पहलू की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं : भविष्यवक्ताओं की भूमिका।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

भविष्यवक्ता

हम भविष्यवक्ताओं की भूमिका पर इस प्रकार विचार करेंगे, पहला, हम उनकी तुलना प्राचीन वाचाई दूतों के साथ करेंगे; दूसरा, हम उनके भविष्यवाणी के कार्य के संभावित परिणामों को देखेंगे; और तीसरा, हम इस बात पर ध्यान देंगे कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में प्रेरित यूहन्ना ने भविष्यवक्ता की भूमिका को कैसे पूरा किया। आइए हम वाचाई दूतों के रूप में बाइबल के भविष्यवक्ताओं पर ध्यान देने के द्वारा आरंभ करें।

वाचाई दूत

हम पहले ही देख चुके हैं कि बाइबल परमेश्वर के लोगों के साथ उसकी वाचा का वर्णन ऐसे रूपों में करती है जो प्राचीन समय की राजकीय संधियों के साथ मेल खाते हैं। अतः इस समय हम इस संबंधित विचार की ओर देखने के लिए तैयार हैं कि प्रेरित यूहन्ना के समान बाइबल के भविष्यवक्ताओं ने राजकीय दूतों या परमेश्वर की वाचा के संदेशवाहकों के रुप में सेवा की थी।

प्राचीन संसार में, सम्राट व्यक्तिगत रूप से अपने विशाल राज्यों की यात्रा नहीं करते थे — कम से कम नियमित रूप से तो नहीं। इसकी अपेक्षा, उन्होंने अपने लिए इस कार्य को करने के हेतु राजदूतों को नियुक्त किया था। यह इन राजदूतों का कार्य था कि वे सम्राट के वासल राजाओं या सेवकों को संधि की शर्तों को पूरा करने के लिए उत्साहित करें। राजदूतों ने यह कार्य मुख्यतः वासल राजाओं को उन पुरस्कारों की याद दिलाने के द्वारा किया जो वे तब प्राप्त करेंगे यदि वे वाचा की शर्तों के प्रति विश्वासयोग्य रहें, और साथ ही साथ उन्हें दंड की चेतावनी भी दी यदि वे उन शर्तों का उल्लंघन कर देते हैं।

लगभग इसी तरह, परमेश्वर ने सामान्यतः पुराने नियम और नए नियम में अपने वाचाई दूतों के रूप में सेवा करने के लिए भविष्यवक्ताओं को भेजा। उसने उन्हें अपने लोगों के समक्ष विशेष संदेश या भविष्यवाणियों को पहुँचाने का आदेश दिया। जब लोग आज्ञाकारी थे, तो भविष्यवक्ताओं ने उन्हें उन पुरस्कारों की याद दिलाने के द्वारा उत्साहित किया जो वे तब प्राप्त करेंगे यदि वे निरंतर आज्ञाकारी बने रहें। परंतु जब लोगों ने आज्ञा नहीं मानी, तो भविष्यवक्ताओं ने सामान्यतः उन्हें उस दंड की चेतावनी दी जो परमेश्वर उनके विरुद्ध लेकर आएगा यदि वे पश्चाताप करने और अपने मार्गों से फिरने का इनकार कर देंगे।

> ये भविष्यवक्ता मूलभूत रूप से वाचा के अधिवक्ता हैं। इनका काम यहोवा के मुकदमें को उसके लोगोंके विरुद्ध लड़ना है। संपूर्ण इतिहास में उसके लोगों ने अवज्ञाकारिता की है। भविष्यवक्ताओं ने घोषणा की कि परमेश्वर के लोगों ने अवज्ञाकारिता की है और इसलिए श्राप आ रहे हैं। परंतु श्रापों के बाद, जहाँ व्यवस्था का उल्लंघन होता है वहाँ हमेशा आशा का यह दृष्टिकोण बना रहता है, और प्रभु अपने इन भविष्यवक्ता के द्वारा नवीनीकरण की संभावना, एक नई वाचा, या एक नए मंदिर, या बचे हुए लोगों की वापसी, या फिर ऐसी अन्य बातों को प्रदान करता है।
>
> — डॉ. माइल्स वान पैल्ट

जैसे कि हमने इस अध्याय में कहा था, अधिकांश आधुनिक मसीही शब्द “भविष्यवाणी” को भविष्य से संबंधित कही गई बातों के साथ जोड़ते हैं। परंतु बाइबल के संसार में, शब्द “भविष्यवाणी” को मुख्यतः उन संदेशों पर लागू किया जाता है जिन्हें परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए इसलिए भेजा कि उन्हें विश्वासयोग्यता के लिए प्रेरित करे। भविष्यवक्ता परमेश्वर के वाचाई दूत थे। उन्होंने उसके लोगों को वाचा की जिम्मेदारियों, और उनके व्यवहार के परिणामों के बारे में याद कराया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> कई लोग सोचते हैं कि बाइबल की भविष्यवाणी मुख्यतः भविष्य की बातों को कहना है, परंतु यह सही नहीं है। भविष्य की बातों को कहना इसका एक महत्वपूर्ण भाग है, परंतु मुख्यतः बाइबल की भविष्यवाणी की प्रमुख विशेषता लोगों के नैतिक स्वभाव के विषय में भविष्यवक्ता की चिंता है। और इस प्रकार इस संदर्भ में भविष्य की बातें कही जाती हैं। यदि लोग परमेश्वर के निर्देशों के प्रति प्रत्युत्तर देंगे, तो भविष्य आशापूर्ण होगा। यदि वे प्रत्युत्तर नहीं देंगे, तो भविष्य आशापूर्ण नहीं होगा। अतः बाइबल की भविष्यवाणी का उद्देश्य लोगों को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य जीवन जीने के लिए वापस बुलाना है।
>
> — डॉ. जॉन ऑस्वाल्ट

जब किसी भविष्यवाणी का उद्देश्य परमेश्वर के लोगों को कार्य करने के लिए प्रेरित करना था, तो उसे भविष्य के परम और अपरिवर्तनीय पूर्वानुमान के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। इसकी अपेक्षा, इसे आशीषों के प्रस्ताव या श्राप की चेतावनी के रूप में देखा जाना चाहिए। यदि लोग भविष्यवाणी के प्रति सकारात्मक रूप से प्रत्युत्तर देते हैं, तो वे आशीषों की अपेक्षा कर सकते हैं। परंतु यदि वे पश्चाताप करने से इनकार कर देते हैं या फिर अपनी आज्ञाकारिता में उदासीन हो जाते हैं, तो वे श्राप को प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं।

सुनिए यिर्मयाह 18:7-10 में परमेश्वर ने भविष्यवाणी की प्रकृति और उद्देश्य के विषय में क्या कहा :

> जब मैं किसी जाति या राज्य के विषय कहूँ कि उसे उखाड़ूँगा या ढा दूँगा अथवा नष्ट करूँगा, तब यदि उस जाति के लोग जिसके विषय मैं ने यह बात कही हो अपनी बुराई से फिरें, तो मैं उस विपत्ति के विषय जो मैं ने उन पर डालने की ठानी हो पछताऊँगा। और जब मैं किसी जाति या राज्य के विषय कहूँ कि मैं उसे बनाऊँगा और रोपूँगा; तब यदि वे उस काम को करें जो मेरी दृष्टि में बुरा है और मेरी बात न मानें, तो मैं उस भलाई के विषय जिसे मैं ने उनके लिये करने को कहा हो, पछताऊँगा। **(यिर्मयाह 18:7-10)**

यहाँ परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से कहा कि भविष्यवाणियाँ आने वाली विपत्ति या भलाई की घोषणाएँ हैं। परंतु उस भविष्यवाणी को प्राप्त करनेवाले इसे प्रभावित कर सकते हैं कि भविष्यवाणी कैसे पूरी होती है। यदि लोग पश्चाताप करते हैं तो विपत्ति की घोषणाओं पर पुनर्विचार किया जा सकता है। और यदि लोग पापपूर्ण कार्य करना आरंभ कर देते हैं तो आशीषों की घोषणाओं पर भी पुनर्विचार किया जा सकता है।

हो सकता है कि पहले पहल यह अजीब प्रतीत हो, परंतु यह तब बिल्कुल सही अर्थ प्रकट करता है जब हम समझ जाते हैं कि भविष्यवक्ता वाचाई दूत थे। परमेश्वर की वाचा ने उसके लोगों से विश्वासयोग्यता की मांग की और आज्ञाकारिता तथा अवज्ञाकारिता दोनों के परिणाम प्रदान किए।

> कुछ लोग सोचते हैं कि बाइबल की भविष्यवाणी का मुख्य उद्देश्य भविष्य की बातों के बारे में बताना है, पर निश्चित रूप से यह बाइबल की भविष्यवाणी का एक तत्व है। परंतु पारंपरिक रूप से, बहुत से लोगों ने भविष्यवाणी के बारे में कहा है कि यह बातों को बताना और साथ ही बातों को पहले से बताना है। निस्संदेह, बातों को पहले से बताना भविष्य की बातों को बताना है। परंतु जब आप भविष्यवक्ताओं की पुस्तकें पढ़ते हैं तो बातों को बताना भी बहुत महत्वपूर्ण

हैं, क्योंकि बहुत बार उनकी कही अधिकाँश बातें भविष्य को बतानेवाली बातें नहीं होतीं। वे लोगों के पापों के कारण उनका विरोध करते हैं, वे उन पर परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करने का आरोप लगाते हैं; वे उन्हें पश्चाताप करने की ओर वापस बुलाते हैं — अतः हम कह सकते हैं कि यह उत्साहजनक है। और मैं यह विश्वास करता हूँ कि भविष्य की बातों को बताने का अर्थ द्वितीयक है, और यह कि परमेश्वर बाइबल की उत्कृष्ट भविष्यवाणी, जैसे आमोस, यशायाह, होशे जैसी पुस्तकों में जो करने का प्रयास कर रहा है, वह यह है कि वह लोगों को अपने साथ एक सही संबंध की ओर वापस बुला रहा है। और बहुत बार भविष्य की बातें अनिश्चित होती हैं; वे परिस्थितियों पर आधारित होती हैं। परमेश्वर उन्हें दिखा रहा है कि यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे तो उनका भविष्य कैसा होगा। और वास्तव में परमेश्वर जब बिल्कुल मजबूर हो जाता है तभी उनको दंड देता है। अतः वह उन्हें चेतावनी दे रहा है, यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे, तो तुम्हारे साथ ऐसा होगा। परंतु यदि वे पश्चाताप करते हैं, तो शायद परमेश्वर उनको दंड न दे। या उद्धार की भविष्यवाणी के विषय में वह उन्हें दिखा रहा है कि यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन करना जारी रखते हो या यदि तुम वापस आ जाते हो तो तुम्हारा भविष्य ऐसा दिखाई देगा। अतः यह नकारात्मक या फिर सकारात्मक प्रेरणा हो सकती है। इसलिए मेरे विचार से यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम बातों को बताने और भविष्य की बातों को बताने को आपस में मिला दें और यह समझ लें कि बाइबल की भविष्यवाणी वास्तव में यही है।

— डॉ. रॉबर्ट चीज्म, जूनियर

अब यह दर्शाना बहुत महत्वपूर्ण है कि कई बार परमेश्वर ने वास्तव में अपने लोगों को भविष्य की एक झलक प्रदान करने के लिए भविष्यवाणियाँ प्रदान की थीं। अन्य समयों पर, वह भविष्यवाणी को कहे अनुसार पूरा करने के लिए इतना संकल्पी था कि उसने चमत्कारिक रूप से सुनिश्चित किया कि उसके लोग ऐसे कार्य करें जिससे वह भविष्यवाणी बिना किसी परिवर्तन के पूरी हो जाए। ऐसे समयों में भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर के सामर्थी अभिप्रायों की ओर स्पष्ट रूप से संकेत किया।

परमेश्वर द्वारा अपने मजबूत अभिप्राय को दिखाने का एक तरीका अपनी भविष्यवाणियों में आश्वासन को जोड़ना था। ये शायद वे शब्द होंगे जो उसके मजबूत अभिप्रायों, प्रतीकात्मक भविष्यवाणिय कार्यों, या फिर चमत्कारिक चिह्नों को दर्शाते हों। जब कभी इस तरह के आश्वासन किसी भविष्यवाणी के साथ जुड़ते थे, तो यह दिखाता था कि मनुष्यों के लिए भविष्यवाणी के परिणाम को बदलना कठिन होगा।

कई बार, हम प्रतिज्ञाओं के द्वारा अभिपुष्ट अन्य भविष्यवाणियों को इन स्थानों पर देखते हैं, आमोस 4:2 जहाँ परमेश्वर ने अपनी पवित्रता की शपथ खाई थी; यिर्मयाह 49:13 जहाँ उसने स्वयं की सौगंध खाई थी; और यहेजकेल 5:11, जहाँ परमेश्वर ने अपने जीवन की सौगंध खाकर कहा था कि दंड अवश्य आएगा।

जब परमेश्वर ने स्वयं की शपथ खाई, तो उसने मनुष्य के प्रत्युत्तरों के द्वारा भविष्यवाणी के परिणाम के बिगड़ने की संभावना को प्रभावशाली तरीके से हटा दिया। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं ने पहले से बताए गए परिणाम की निश्चितता को वाचा के स्तर तक ऊँचा उठा दिया। जैसे कि यह निश्चित है कि परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता, वैसे ही वह उसे नहीं बदलेगा जिसके बारे में उसने स्वयं की शपथ खाई है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर ने कई बार भविष्यवाणियों को आश्वासनों और प्रतिज्ञाओं के द्वारा दृढ़ किया, और इस सच्चाई के द्वारा हमें राहत मिलनी चाहिए, क्योंकि हमारा मसीही विश्वास बाइबल की भविष्यवाणी की अंततः पूर्णता पर आधारित है। सबसे महत्वपूर्ण रूप में, हमारा विश्वास है कि एक दिन आएगा जब मसीह अपने शत्रुओं को दंड देने और अपने विश्वासयोग्य अनुयायियों को पुरस्कार देने पृथ्वी पर वापस आएगा। हमें आशा है कि एक दिन परमेश्वर अपनी सृष्टि को पुनर्स्थापित करेगा और हमारी आँखों से प्रत्येक आँसू को पोंछ डालेगा। संपूर्ण पवित्रशास्त्र में इन भविष्यवाणियों को इतनी बार दृढ़ किया गया है कि हम जानते हैं कि उन्हें न तो निरस्त किया जा सकता है और न ही घटाया जा सकता है। एक दिन, मसीह के पुनरागमन के बारे में पहले से बताई गईं सभी बातें पूरी हो जाएँगी।

वाचाई दूतों के रूप में भविष्यवक्ताओं की इस मूलभूत समझ को ध्यान में रखते हुए, अब हम उनके भविष्यवाणिय कार्य के संभावित परिणामों की ओर देखने के लिए तैयार हैं।

संभावित परिणाम

जैसा कि हमने अभी देखा है, आशीषों की भविष्यवाणियाँ परमेश्वर को स्वतः ही मजबूर नहीं करतीं कि वह लगातार अपने लोगों को आशीष देता रहे। यदि किसी समय पर वे उससे फिरकर दूर हो जाते हैं, तो एक संभावित परिणाम यह होगा कि परमेश्वर अपने लोगों की अवज्ञाकारिता को संबोधित करने के लिए उन आशीषों पर पुनर्विचार करे।

और इसी प्रकार, दंड की भविष्यवाणियों को भी सामान्यतः उन लोगों के लिए चेतावनी के रूप में देखा जाना चाहिए जो परमेश्वर के लोग होने का दावा करते हैं। भविष्यवाणिय चेतावनियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि यदि लोग अपने पापपूर्ण मार्गों में निरंतर चलते रहते हैं तो परमेश्वर क्या करेगा। और ये चेतावनियाँ पहले से ही दे दी गई हैं क्योंकि परमेश्वर दयालु है — वह चाहता है कि उसके लोगों को पश्चाताप करने का अवसर मिले, और वे अपनी अवज्ञाकारिता के परिणामों से बचें। इस भाव में, दंड की अधिकाँश भविष्यवाणियाँ अपने लोगों पर परमेश्वर का उपकार ही हैं। उनका उद्देश्य लोगों को ऐसे विनाश की पहले से चेतावनी देना नहीं है जिसे टाला न जा सके, बल्कि उन्हें प्रेरित करना है कि वे अपने मार्गों को बदलें।

पवित्रशास्त्र कम से कम इसे पाँच रूपों में दर्शाता है जिनमें भविष्यवाणी के संभावित परिणाम इसके प्राप्त करनेवालों के प्रत्युत्तरों के द्वारा प्रभावित हो सकते हैं। पहला, कई बार परमेश्वर ने किसी भविष्यवाणिय चेतावनी या प्रस्ताव को निरस्त किया।

उदाहरण के लिए, योएल 2:12-14 में भविष्यवक्ता योएल के शब्दों को सुनिए।

> "तौभी," यहोवा की यह वाणी है, "अभी भी सुनो, उपवास के साथ रोते-पीटते अपने पूरे मन से फिरकर मेरे पास आओ। अपने वस्त्र नहीं, अपने मन ही को फाड़कर," अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो; क्योंकि वह अनुग्रहकारी, दयालु, विलम्ब से क्रोध करनेवाला, करुणानिधान और दु:ख देकर पछतानेहारा है। क्या जाने वह फिरकर पछताए और ऐसी आशीष दे जिस से तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का अन्नबलि और अर्घ दिया जाए। (योएल 2:12-14)

यद्यपि योएल ने परमेश्वर के लोगों पर दंड की भविष्यवाणी की थी, परंतु वह समझ गया था कि अब भी आशा है। हृदय से किया हुआ पश्चाताप शायद भविष्यवाणी के परिणाम को बदल दे।

दूसरा, वह आशीष या श्राप जिसकी भविष्यवाणी की गई थी उसमें देरी भी हो सकती थी। उदाहरण के लिए, 2 राजाओं 20:1-7 में यशायाह ने भविष्यवाणी की थी कि राजा हिजिकिय्याह बीमारी के कारण मर जाएगा। इस भविष्यवाणी के प्रत्युत्तर में राजा हिजिकिय्याह रोया और उसने प्रार्थना की और

परमेश्वर से कहा कि वह उसकी विश्वासयोग्य सेवकाई को याद करे। अतः परमेश्वर ने उसकी मृत्यु को 15 वर्ष के लिए टाल दिया।

तीसरा, कई बार परमेश्वर ने उस आशीष और दंड को घटा दिया जिसकी उसने घोषणा की थी। उदाहरण के तौर पर, 2 इतिहास 12:5-12 भविष्यवक्ता शमायाह की कहानी बताता है, जिसने घोषणा की थी कि परमेश्वर मिस्र को अनुमति देगा कि वह इस्राएल को नाश कर दे। जब रहूबियाम और इस्राएल के अगुवों ने यह सुना, तो उन्होंने अपने आप को दीन किया। इसलिए परमेश्वर ने उनके विरूद्ध अपने दंड को घटा दिया। मिस्र के द्वारा नाश होने की अपेक्षा वे मिस्र के केवल अधीन ही होंगे।

चौथा, कई बार परमेश्वर ने वास्तव में भविष्यवाणी की पूर्णता को बढ़ा दिया। परमेश्वर द्वारा भविष्यवाणी की पूर्णता के समय को बढ़ा देने का एक सबसे यादगार समय दानिय्येल 9:1-27 में पाया जाता है। यहाँ परमेश्वर ने अपने लोगों को प्रतिज्ञा की भूमि से 70 वर्षों के लिए निर्वासन में भेज देने के द्वारा उन्हें श्राप दिया था। परंतु 70 वर्ष समाप्त हो जाने पर भी उन्होंने अपने पापों से पश्चाताप नहीं किया था। इसलिए परमेश्वर ने समय को बढ़ाकर उनके निर्वासन को और अधिक बढ़ा दिया।

और पाँचवाँ, भविष्य के बारे में कहीं गई बातें अपरिवर्तित रूप में भी पूरी होती हैं। उदाहरण के तौर पर, दानिय्येल 4:28, 33 ऐसे भविष्यवाणिय स्वप्न की पूर्णता का उल्लेख करता है जिसका अर्थ दानिय्येल भविष्यवक्ता ने बताया था। इस स्वप्न में पहले से ही बताया गया था कि राजा नबूकदनेस्सर को उसके लोगों में से निकाल दिया जाएगा और वह जानवर के समान घास खाएगा। इस स्वप्न के एक वर्ष के बाद पद 30 और 31 में परमेश्वर के भविष्यवाणिय वचनों के द्वारा इस स्वप्न को फिर से दृढ़ किया गया। और परमेश्वर के वचनों के ठीक बाद यह भविष्यवाणी वैसे ही पूरी हुई जैसे की गई थी।

अब जबकि हमने बाइबल के भविष्यवक्ताओं की भूमिका की तुलना प्राचीन वाचाई दूतों से कर ली है और उनके कार्यों के संभावित परिणामों को देख लिया है, इसलिए आइए हम अपना ध्यान इस बात पर लगाएँ कि प्रेरित यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में एक भविष्यवक्ता की भूमिका को कैसे पूरा किया।

प्रेरित यूहन्ना

यह देखना सरल है कि जब यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा, तो वह परमेश्वर के वाचाई दूत के रूप में कार्य कर रहा था, और उसका लक्ष्य आरंभ की कलीसिया को अटल विश्वासयोग्यता के लिए उत्साहित करना था। यूहन्ना ने एशिया माइनर की कलीसियाओं को उन महत्वपूर्ण तत्वों का स्मरण कराया जो बाइबल की सभी वाचाओं में पाए जाते हैं। उसने उन्हें परमेश्वर के उपकार का स्मरण कराया। उसने विश्वासयोग्यता की मांग पर बल दिया। और उसने विश्वासयोग्यता के लिए आशीषों और अविश्वासयोग्यता के लिए श्रापों के परिणामों पर बल दिया।

ये विशेषताएँ कई रूपों में इस पूरी पुस्तक में पाई जाती हैं। परंतु उन्हें सबसे स्पष्ट रूप में प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में सात कलीसियाओं को लिखे पत्रों मे प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक पत्र यीशु मसीह की महानता और उसके उपकार की पुष्टि के साथ आरंभ होता है। तब यह विश्वासयोग्यता की मांग की ओर ध्यान आकर्षित करता है, और आशीषों का प्रस्ताव या श्रापों की चेतावनी देता है।

एक उदाहरण के तौर पर, प्रकाशितवाक्य 2:1-7 में इफिसुस को लिखे पत्र पर ध्यान दें। यह प्रकाशितवाक्य 2:1 में परमेश्वर के उपकार के एक कथन के साथ यह कहते हुए आरंभ होता है :

> जो सातों तारे अपने दाहिने हाथ में लिये हुए है, और सोने की सातों दीवटों के बीच में फिरता है, वह यह कहता है। (प्रकाशितवाक्य 2:1)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रकाशितवाक्य 2:1 में परमेश्वर का उपकार इस तथ्य में दिखाई देता है कि यीशु उन दीवटों के बीच में फिरा, जो उन कलीसियाओं को प्रस्तुत करती हैं जिन्हें पत्र में संबोधित किया गया है। उसने उन्हें त्याग नहीं दिया था, बल्कि वह हमेशा उनके साथ था।

जैसे-जैसे इफिसुस की कलीसिया को लिखा पत्र आगे बढ़ता है, तो हम मानवीय विश्वासयोग्यता की मांग को देखते हैं। उदाहरण के तौर पर, पद 2-4 में यीशु ने परिश्रम और धीरज के विषय में इफिसुस की कलीसिया की प्रशंसा की, परंतु साथ ही पहले से प्रेम को खो देने के कारण उसकी आलोचना भी की। उसने नीकुलइयों के कामों के लिए इफिसुस के लोगों की घृणा को भी प्रमाणित किया।

इसके बाद, इफिसुस की कलीसिया को लिखा पत्र वाचा के परिणामों की ओर मुड़ता है। अवज्ञाकारिता के फलस्वरूप आए श्रापों को पद 5 में देखा जा सकता है, जहाँ यीशु ने चेतावनी दी कि यदि लोग पश्चाताप करने और अपने पहले प्रेम को फिर से जगाने में विफल रहते हैं तो वह कलीसिया की दीवट को उसके स्थान से हटा देगा। और आज्ञाकारिता के फलस्वरूप आई आशीषों को पद 7 में देखा जा सकता है, जहाँ यीशु ने अपने आज्ञाकारी अनुयायियों को जीवन के वृक्ष तक पहुँचने की अनुमति दी।

> कई बार यह प्रश्न उठता है, यदि परमेश्वर की आशीष हमारे किसी कार्य पर निर्भर होती है, तो क्या इसका अर्थ है कि हमारा उद्धार किसी न किसी तरह से हमारे भले कार्यों पर निर्भर है? क्या उद्धार के सकारात्मक परिणाम में वास्तव में हमारा कोई योगदान है? यह बात रोचक है कि जो पारंपरिक अरमेनियनवादी और काल्विनवादी विचारधारा में विश्वास रखते हैं जो कि इतिहास में एक बड़ी बहस का विषय रहा है, वे वास्तव में इस बात से सहमत हैं कि परमेश्वर ने मनुष्यों को इच्छाशक्ति के साथ बनाया है, और कि हम पर पतन के हानिकारक प्रभाव ने हमसे परमेश्वर की इच्छा और मार्गों के अनुसार कार्य करने की हमारी इच्छाशक्ति और हमारी जिम्मेदारी की क्षमता को छीना नहीं है। अब इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर हमें आज्ञाओं और निमंत्रणों के द्वारा इस परमेश्वर-प्रदत योग्यता को कार्य में लाने की चुनौती निरंतर देता आ रहा है। अतः कई विषयों में हमें परमेश्वर के प्रति इस रीति से प्रत्युत्तर देना चाहिए जिसमें उसने प्रतिज्ञा की है कि वह हमें आशीष देगा। परंतु हम फिर वहाँ लौट आते हैं और और यह स्वीकार करते हैं कि यह अंततः वास्तव में अनुग्रह ही है कि उचित रूप से प्रत्युत्तर देने की योग्यता अंततः हमारी सहायता-रहित क्षमताओं से नहीं बल्कि परमेश्वर के बड़े उद्देश्य और सर्वोच्च अनुग्रह से निकलती है, ताकि, हम उस योजना में शामिल हों जिसके द्वारा हमें आशीष मिलती है, परंतु यह कार्य हम परमेश्वर द्वारा हमें भले प्रकार से सक्षम किए जाने की पूर्ण निर्भरता के द्वारा करते हैं।
>
> — डॉ. ग्लेन स्कोर्गी

जब प्रेरित यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा, तो एशिया माइनर की कई कलीसियाएँ परमेश्वर की वाचा के प्रति अपने समर्पण में डगमगा रही थीं। कलीसिया के भीतर के ही कुछ लोग इस बात पर भी संदेह करने लगे थे कि क्या यीशु सचमुच वापस आएगा। और अन्य लोग सोचने लगे थे कि यीशु का राज्य कैसे बढ़ेगा जब वे व्यक्तिगत रूप से तो बस दुःख और विरोध का ही अनुभव कर रहे थे। अतः प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में प्रेरित यूहन्ना ने इन कलीसियाओं के प्रति परमेश्वर के भविष्यवक्ता के रूप में सेवा की। उसने उन्हें परमेश्वर के उपकार का स्मरण कराया। उसने अपने पाठकों को अविश्वासयोग्यता के खतरों के विषय में चेतावनी दी। और उसने उन्हें भविष्य के लिए आशा प्रदान की ताकि वे प्रभु के पुनरागमन तक विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उत्साहित हों।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस अध्याय में अब तक हमने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की ऐतिहासिक और धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर चर्चा की है। इसलिए अब हम इसकी साहित्यिक पृष्ठभूमि को देखने के लिए तैयार हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अपने समय के अन्य लेखनों की तुलना में कैसी है?

साहित्यिक पृष्ठभूमि

हम प्रकाशितवाक्य की साहित्यिक पृष्ठभूमि का अध्ययन दो चरणों में करेंगे। पहला, हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की तुलना पुराने नियम की भविष्यवाणी की शैली से करेंगे। और दूसरा, हम इसकी तुलना बाइबल की भविष्यवाणी के उस विशेष प्रकार से करेंगे जिसे "प्रकाशन संबंधी साहित्य" के नाम से जाना जाता है। आइए हम पुराने नियम की भविष्यवाणी से आरंभ करें।

भविष्यवाणी

बाइबल में साहित्य के कई भिन्न-भिन्न प्रकार या शैलियाँ पाई जाती हैं : ऐतिहासिक विवरण, व्यवस्था, काव्य, बुद्धि साहित्य, पत्रियाँ, भविष्यवाणियाँ इत्यादि। प्रत्येक शैली की अपनी साहित्यिक परंपरा और बातचीत के तरीके हैं। ऐतिहासिक विवरण, काव्य साहित्य की तुलना में अधिक प्रत्यक्ष रूप से बातचीत करते हैं। पत्रियाँ और भी अधिक प्रत्यक्ष रूप में होती हैं, और अक्सर अपने पाठकों को बताती हैं कि बाइबल की शिक्षाओं को विशेष परिस्थितियों में कैसे लागू करना चाहिए।

जब हम बाइबल को पढ़ते हैं तो ऐसी भिन्नताओं को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण होता है। आखिरकार, एक अनुच्छेद क्या सिखाता है उसे समझना तब और भी सरल हो जाता है जब हम यह समझ लें कि यह कैसे सिखाता है। इसलिए यदि हम चाहते हैं कि हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अर्थ को समझें, तो हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम इसकी शैली को सही तरीके से पहचानें।

> बाइबल की पुस्तकों की शैली को पहचानना महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रत्येक साहित्यिक शैली की अपनी परंपराएँ और अपने ही तरीके होते हैं जो दावा करते हैं कि यह अपने संदेश को कैसे बताती है। उदाहरण के लिए, यदि मुझे राशन की दुकान से मिली रसीद को पढ़ना हो, तो मैं उसे अपनी बेटी से मिले पत्र की अपेक्षा बिल्कुल अलग तरीके से पढ़ूँगा। इसी प्रकार, जब हम बाइबल और बाइबल के लेखों को पढ़ते हैं, तो हम पाते हैं कि बाइबल के लेख विशेष शैलियों में लिखे गए हैं। इसलिए यदि मैं व्यवस्था के लेख को पढ़ता हूँ, उदाहरण के लिए मूसा की पुस्तक में से, तो मैं उसे विशेष अपेक्षाओं के साथ पढ़ूँगा और अपना ध्यान ऐसी परंपराओं और नियमों की ओर लगाऊँगा जो उस शैली में पाए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर, ये नीतिवचन के उन वचनों को पढ़ने से बिल्कुल अलग होगा, जो जीवन के अनुभवों या परमेश्वर के वचन से ली गईं बुद्धि की संक्षिप्त बातें हैं। मैं इन्हें उस विलापपूर्ण भजन से भी बिल्कुल अलग रीति से पढ़ूँगा, जिसमें परमेश्वर के लोग उन कष्टों पर विलाप कर रहे हैं जिनमें से होकर वे जा रहे हैं। अतः जब हम बाइबल के किसी एक लेख की ओर ध्यान देते हैं, तो हमें उसकी शैली पर ध्यान देना चाहिए ताकि हम समझ सकें कि किस तरह की परंपराएँ , कैसी संरचनाएँ, और कौनसी विधियाँ लेखक के मन में थीं जब वह परमेश्वर के लोगों को अपना संदेश सुना रहा था। जब हम उचित तरीके से यह समझ जाते हैं कि

लेख को किस प्रकार रखा गया है, तो हम और अधिक स्पष्टता से समझ सकते हैं कि लेख हमें क्या बता रहा है।

— डॉ. स्कॉट रेड

पवित्रशास्त्र में भिन्न-भिन्न शैलियाँ या विभिन्न प्रकार के लेखन हैं। अतः आपके पास ऐतिहासिक विवरण हैं जिनकी व्याख्या आपको रूपकों के समान नहीं करनी चाहिए। आपको उन्हें प्रतीकों के रूप में भी नहीं लेना चाहिए, वे ऐसी घटनाओं के सच्चे विवरण हैं जो वास्तव में घटित हुई थीं। इसलिए आप कहानी से मिलने वाली सीख को ढूँढ़ सकते हैं, परंतु आपको उसे प्रतीकों की श्रृखंला में बदलने का प्रयास नहीं करना है। दाऊद के पाँच चिकने पत्थर अलग-अलग बातों को नहीं दर्शाते; गोलियत ने उन चिकने पत्थरों में से पहले पत्थर का अनुभव बहुत ही वास्तविक तरीके से किया था। परंतु जब आप बाइबल में अन्य प्रकार के लेखनों को देखते हैं, तो आपके पास काव्य है जहाँ काव्यात्मक अनुमति है — उसमें बहुत सी उपमा, और रूपक पाए जाते हैं। बंधुआई से पूर्व के बहुत से भविष्यवक्ताओं ने काव्यात्मक शैली में भविष्यवाणी की थी, इसलिए उनकी भाषा रूपकों और प्रतीकों से भरी हुई है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक उसी परंपरा को आगे बढ़ाती है, यद्यपि यह प्राथमिक रूप से काव्य रूप में नहीं है, परंतु फिर भी यह बहुत से प्रतीकात्मक रूपकों का प्रयोग करने की भविष्यवाणिय परंपरा को आगे बढ़ाती है। यह कई बार हमें वह बताने में भी स्पष्ट है। उदाहरण के तौर पर, प्रकाशितवाक्य 1:20 में यह स्पष्ट करती है कि कुछ प्रतीकों के क्या अर्थ हैं। अतः प्रकाशितवाक्य प्रतीकों से भरा हुआ है और हमें इसे इसी रूप में समझने की आवश्यकता है, क्योंकि परमेश्वर ने इसे ऐसे ही प्रेरित किया है, और परमेश्वर का उद्देश्य यही था कि हम इसे ऐसे ही समझें।

— डॉ. क्रेग एस. कीनर

प्रकाशितवाक्य की शैली को मोटे तौर पर भविष्यवाणी के रूप में पहचाना जा सकता है। वास्तव में, यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 1:3 में इसे खासकर भविष्यवाणी कहा है। जैसा कि हम देख चुके हैं, बाइबल की भविष्यवाणी में कई बार भविष्य की बातें शामिल थीं। परंतु किसी अन्य बात से बढ़कर, यह परमेश्वर की ओर से उसके लोगों के लिए संदेश था जिसका उद्देश्य उन्हें विश्वासयोग्यता के लिए प्रेरित करना था।

हम बाइबल की भविष्यवाणी की शैली का अध्ययन दो तरीकों से करेंगे। पहला, हम इसकी विशेषताओं को देखेंगे। और दूसरा, हम पवित्रशास्त्र में पाई जानेवाली भविष्यवाणी की विभिन्न प्रकार की पूर्णताओं पर विचार करेंगे। आइए हम भविष्यवाणी की विशेषताओं से आरंभ करें।

विशेषताएँ

बाइबल की भविष्यवाणी की कई विशेषताएँ हैं, और उन सबका उल्लेख करने का समय हमारे पास नहीं है। इसलिए हम इसके विशिष्ट रूपों से आरंभ करते हुए इसकी दो सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं पर ही ध्यान देंगे।

क्योंकि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक बाइबल की भविष्यवाणी की शैली में उपयुक्त बैठती है, इसलिए यह पुराने नियम की भविष्यवाणी के कुछ विशिष्ट रूपों को सारगर्भित करने में हमारी सहायता करेगी। पुराने नियम में, भविष्यवाणी परमेश्वर के लोगों के लिए ताड़ना का संदेश हो सकती थी, या फिर

उसके शत्रुओं के लिए विलाप या दंड की ईश्वरीय वाणी, आज्ञाकारिता के लिए आशीष की घोषणा, वाचा के प्रति विश्वासयोग्य लोगों के लिए प्रतिज्ञा की पुष्टि, छुटकारे के लिए परमेश्वर की योजना की घोषणा, भविष्यवक्ता और परमेश्वर के बीच प्रार्थना या बातचीत, और कभी-कभी भविष्य की घटनाओं को पहले से बता देना भी हो सकती थी।

पुराने नियम की भविष्यवाणी का एक सबसे सामान्य रूप मुकदमा था, जिसमें भविष्यवाणी के शब्द न्यायालय की कानूनी भाषा के समान होते थे। औसतन, परमेश्वर को ऐसे प्रस्तुत किया जाता था कि वह अवज्ञाकारी इस्राएल को दंड देने के लिए न्यायालय में बुला रहा है। इन मुकदमों ने सामान्यतः परमेश्वर की दयालुता पर बल दिया और यदि इस्राएल लगातार अवज्ञाकारी बना रहता है तो दंड की चेतावनी भी दी। कई बार, उन्होंने विश्वासयोग्यता के लिए पुरस्कार और पश्चाताप के लिए आशीषों का प्रस्ताव भी दिया। अक्सर, दंड की इन चेतावनियों और आशीष के प्रस्तावों के संदर्भ में भविष्य की बातों को रखा जाता था, जो यह दर्शाता है कि भविष्य की बातों का पूरा होना भविष्यवाणी के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया पर आधारित था।

कई रूपों में, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यूहन्ना की भविष्यवाणियों ने पुराने नियम की भविष्यवाणियों के समान ही कार्य किया।

पुराने नियम की भविष्यवाणी की दूसरी विशेषता यह है कि यह अपने अर्थ को प्रकट करने के लिए लगातार रूपकों का प्रयोग करती है। शब्द रूपक के कई अर्थ हो सकते हैं। परंतु जब हम इसका प्रयोग भविष्यवाणी का वर्णन करने के लिए करते हैं, तो हम ऐसी भाषा की बात कर रहे हैं जो बातों का वर्णन ऐसे करती है जिससे काल्पनिक संवेदी अनुभव उत्पन्न होते हैं। वास्तव में, रूपक ऐसे तरीकों को दर्शाता है जिसमें हम देखने, सुनने, सूंघने, चखने या किसी वस्तु को छूने की कल्पना कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, यिर्मयाह 18 में भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने चाक पर मिट्टी से कुछ बना रहे कुम्हार के रूपक का प्रयोग किया ताकि वह यह समझा सके कि परमेश्वर के पास इस्राएल को वैसे आकार देने का अधिकार है जैसे वह चाहता है।

और यहेजकेल 37 में, यहेजकेल ने सूखी हड्डियों से भरी तराई के रूपक का प्रयोग किया ताकि वह परमेश्वर के लोगों की आत्मिक निर्जीवता का वर्णन करे। फिर उसने यह स्पष्ट करते हुए आशा प्रदान की कि जीवित मनुष्यों का रूप लेने के लिए हड्डियाँ एक साथ जुड़ गईं। और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक भी बहुत बार रूपक का प्रयोग करती है।

सुनिए प्रकाशितवाक्य 1:15-16 में यूहन्ना ने यीशु का वर्णन किस प्रकार किया :

> उसके पाँव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्ठी में तपाया गया हो, और उसका शब्द बहुत जल के शब्द के समान था। वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए था, और उसके मुख से तेज दोधारी तलवार निकलती थी। उसका मुँह ऐसा प्रज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है। **(प्रकाशितवाक्य 1:15-16)**

यीशु के ये सुंदर रूपक उसकी महान सामर्थ्य और अधिकार को दर्शाते हैं। उसकी आवाज में बहुत बड़े जल की आवाज की सामर्थ्य है; वह अपने हाथों में सात तारे लिए हुए है, जो राजकीय अधिकार को दर्शाते हैं; और उसका मुख बड़े तेज से चमकता है जब वह इस संसार को प्रकाश देता है।

हम संपूर्ण प्रकाशितवाक्य में ऐसे ही रूपकों को पाते हैं। हम कई सिर वाले पशुओं जिनके सींग और मुकुट थे, तुरही और कटोरे लिए हुए स्वर्गदूतों, गीतों और बदले की चिल्लाहटों, चर्मपत्रों के खाने और लेखपत्रों के खाने और चखने, घोड़ों और घुड़सवारों, पहाड़ों, और स्वर्ग से उतरनेवाले नगर तक के बारे में

पढ़ते हैं। वास्तव में, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ऐसा कोई भी अनुच्छेद ढूँढना कठिन होगा जिसमें किसी न किसी प्रकार का रूपक न पाया जाता हो।

> प्रकाशितवाक्य में एक जटिल बात यह है कि इसमें प्रतीकात्मक शब्दों के साथ और अधिक शाब्दिक शब्दों का मिश्रण पाया जाता है। और जब आप प्रतीकात्मक शब्दों को देखते हैं, तो वास्तव में अक्सर उनकी व्याख्या करके हमें बताया जाता है। उदाहरण के लिए, अध्याय 1 में जब यीशु उस विवरण में सात दीवटों और सात तारों का उल्लेख करता है, तो उनका अर्थ बाद में बताया जाता है कि सात दीवट और ये सात तारे वास्तव में क्या हैं। अतः तब आपको पता लगता है कि आप निश्चित रूप से प्रतीकों के साथ कार्य कर रहे हैं, जो बहुत ही सहायक है। ऐसे अन्य समय भी हैं जब चीजों का वर्णन चकित करनेवाले रूपों में किया जाता है और उन्हें किसी वास्तविक चित्र के साथ प्रकट करना कठिन होता है। इसी प्रकार, आपके पास सात सिर वाला एक पशु है, और फिर आप देखते हैं कि बाद में वे सात सिरों या सात पहाड़ियों के बारे में बात करेंगे, और तभी आप देख सकते हैं कि जब आप किसी ऐसी वस्तु से दूर हो रहे हैं जो देखने में वैसी ही दिखाई देती है जिसका अनुमान आप वास्तविक संसार में लगा सकते हैं, तो आप ऐसी बातों की ओर बढ़ते हैं जो और अधिक प्रतीकात्मक हैं।
>
> — डॉ. डेविड डब्ल्यू. चैपमैन

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अपने बहुत से रूपकों को पुराने नियम से लेती है। और इसका अर्थ यह है कि पुराने नियम की भविष्यवाणियों के साथ हमारी जान-पहचान प्रकाशितवाक्य के रूपकों को पहचानने में हमारी सहायता कर सकती है। और इससे बढ़कर, यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के रूपकों की व्याख्या करने में भी हमारी सहायता कर सकती हैं, क्योंकि प्रकाशितवाक्य और पुराना नियम अक्सर समान रूपकों का प्रयोग समान तरीकों में करते हैं।

प्रकाशितवाक्य की संपूर्ण पुस्तक में रूपकों को पहचानने का अर्थ यह नहीं है कि हमें प्रकाशितवाक्य की व्याख्या रूपकात्मक ढंग से करनी है, या कि हम इसके अर्थ का आत्मिककरण कर रहे हैं। इसके विपरीत, रूपकों जैसी साहित्यिक विशेषताओं को पहचानना व्याकरण-संबंधी, ऐतिहासिक व्याख्या की हमारी सामान्य रणनीति का भाग है। आख़िरकार, यदि यूहन्ना का उद्देश्य लाक्षणिक रूप से बात करने का था, तो उसके शब्दों की व्याख्या भावशून्य रूप से शाब्दिक रूपों में करना एक बहुत बड़ी गलती होगी। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का गंभीर अध्ययन इसके रूपकों को स्वीकार करता है, और उनकी व्याख्या सामान्य साहित्यिक परंपराओं के अनुसार करता है।

अब जबकि हमने भविष्यवाणी की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं का परिचय दे दिया है, इसलिए आइए हम भविष्यवाणिय पूर्णताओं के उन प्रकारों पर ध्यान दें जिन्हें हम पवित्रशास्त्र में देखते हैं।

पूर्णताएँ

भविष्यवाणिय पूर्णता एक बहुत ही जटिल विषय है। परंतु इस अध्याय के उद्देश्यों के लिए हम तीन प्रकार की भविष्यवाणिय पूर्णताओं के बारे में बात कर सकते हैं। पहला, भविष्यवाणियाँ प्रत्यक्ष रूप से पूरी हुई हो सकती हैं।

जब अधिकाँश लोग भविष्यवाणी के पूर्ण होने के बारे में सोचते हैं, तो पहली बात जो मन में आती है वह है प्रत्यक्ष पूर्णता। भविष्यवाणियाँ तब प्रत्यक्ष रूप से पूर्ण हो सकती हैं जब उनके द्वारा बताई गईं घटनाएँ वैसे पूरी होती हैं जैसे बताई गई हैं। उदाहरण के तौर पर, यिर्मयाह 25:8-11 में यिर्मयाह ने घोषणा

की कि यहूदा बेबीलोन के हाथों पराजित हो जाएगा और 70 वर्षों के लिए उजाड़ स्थान बन जाएगा। और 2 इतिहास 36:15-21 के अनुसार ठीक ऐसा ही हुआ था।

दूसरा, भविष्यवाणी की अनिश्चित पूर्णता भी है। अनिश्चित पूर्णता तब होती है जब किसी भविष्यवाणी का परिणाम किसी तरह से मनुष्यों द्वारा भविष्यवाणी के प्रति प्रत्युत्तर देने के तरीके की रोशनी में बदल जाता है। हम पहले ही देख चुके हैं कि भविष्यवाणियों के परिणामों को उनके प्राप्त करनेवालों के प्रत्युत्तरों के द्वारा बदला जा सकता है। जब ऐसा होता है, तो हम कह सकते हैं कि परिणाम लोगों के प्रत्युत्तरों पर आधारित थे। यही बात हमारे मन में होती है जब हम भविष्यवाणी की अनिश्चित पूर्णताओं के बारे में बात करते हैं।

उदाहरण के तौर पर, 2 शमूएल 12:1-15 में भविष्यवक्ता नातान ने दाऊद को चेतावनी दी कि परमेश्वर दाऊद को मारने वाला था क्योंकि दाऊद ने बेतशेबा के साथ व्यभिचार किया था और उसके पति उरिय्याह को मार डाला था। इस भविष्यवाणी के प्रत्युत्तर में दाऊद ने पश्चाताप किया। क्योंकि उसने पश्चाताप किया इसलिए परमेश्वर ने उसके जीवन को बचाने के द्वारा दंड को घटा दिया। परंतु परमेश्वर ने फिर भी दाऊद के पुत्र के जीवन को ले लिया और दाऊद के परिवार पर विपत्ति लेकर आया। 2 शमूएल 13-19 दाऊद के परिवार पर नातान की भविष्यवाणी की पूर्णता का विस्तार से वर्णन करते हैं।

तीसरा, भविष्यवाणियों की प्रतीकात्मक पूर्णताएँ हो सकती हैं। इस अध्याय के उद्देश्यों के लिए हम प्रतीक को इस प्रकार परिभाषित करेंगे :

> पवित्रशास्त्र के अतीत के लोगों, संस्थाओं, या घटनाओं को ऐसे पूर्व-प्रकटीकरणों के रूप में देखना जो बाद के लोगों, संस्थाओं और घटनाओं की पहले से झलक देते हैं।

उदाहरण के लिए, पौलुस ने रोमियों 5:14 में आदम को मसीह का प्रतीक कहा, क्योंकि आदम के जीवन में मसीह के जीवन की झलक पहले से दिखाई थी। परंतु जहाँ आदम ने वाटिका में पाप किया और मनुष्यजाति पर पाप तथा मृत्यु को लेकर आया, वहीं यीशु ने आज्ञा का पालन किया और विश्वासियों के लिए अपने में जीवन तथा धार्मिकता को लेकर आया।

अतः भविष्यवाणी की प्रतीकात्मक पूर्णता वह है जिसमें भविष्यवाणी के द्वारा प्रत्यक्ष रूप से कही गई बातें भविष्य की घटनाओं का पूर्व-प्रकटीकरण होती हैं। उदाहरण के तौर पर, मत्ती 2:15 में मत्ती ने कहा कि जब यीशु के परिवार ने मिस्र को छोड़ा तो यह होशे 11:1 की पूर्णता था, जहाँ लिखा है, “मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया।”

होशे का यह पद मसीहा के आगमन की भविष्यवाणी नहीं कर रहा था। वास्तव में, भविष्यवाणी यह कहने के लिए इतिहास में पीछे की ओर देख रही थी कि परमेश्वर ने निर्गमन के समय इस्राएल को मिस्र से छुड़ाया था। परंतु प्रतीकात्मक रूप से कहें तो यह अनुच्छेद यीशु के समय में फिर से पूरा हुआ क्योंकि निर्गमन वह नमूना था जिसने इस्राएल के महान मसीहा के जीवन को पहले से प्रकट किया। नए नियम के लेखक समझ गए थे कि उनके द्वारा नए नियम की पुस्तकों के लिखे जाने से पहले ही पुराने नियम की कुछ भविष्यवाणियाँ पूरी हो चुकी थीं। परंतु फिर भी उन्होंने अपने समय में हुईं बड़ी प्रतीकात्मक पूर्णताओं की ओर संकेत करने में स्वयं को स्वतंत्र समझा।

प्रकाशितवाक्य की तुलना भविष्यवाणी की शैली के साथ कर लेने के बाद अब हम भविष्यवाणी की उस उप-श्रेणी की ओर ध्यान देने के लिए तैयार हैं जिसे प्रकाशन-संबंधी साहित्य के रूप में जाना जाता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रकाशन-संबंधी साहित्य

हम प्रकाशन-संबंधी साहित्य की प्रकृति का अध्ययन दो तरीकों से करेंगे; पहला, इसकी विशेषताओं को देखने के द्वारा, और दूसरा इसके ऐतिहासिक विकास को सारगर्भित करने के द्वारा। आइए हम बाइबल के प्रकाशन-संबंधी साहित्य की विशेषताओं के साथ आरंभ करें।

विशेषताएँ

प्रकाशन-संबंधी साहित्य जटिल है, और इसे कई रूपों में सारगर्भित किया जा सकता है। इन अध्यायों में हम बाइबल के प्रकाशन-संबंधी साहित्य को इस प्रकार परिभाषित करेंगे :

> ऐसा उच्च प्रतीकात्मक साहित्य जो लौकिक, गैरलौकिक और अलौकिक वास्तविकताओं के बीच की पारस्परिक क्रियाओं के बारे में, तथा अतीत, वर्तमान और भविष्य पर उनके प्रभाव के विषय में ऐसे ईश्वरीय प्रकाशनों का वर्णन करता है, जिन्हें सामान्यतः व्यक्तिगत बातचीत के द्वारा प्राप्त किया जाता है।

यह परिभाषा काफी विस्तृत है, इसलिए हमें इसे स्पष्ट करने की आवश्यकता है। पहला, आइए हम इस तथ्य पर ध्यान दें कि बाइबल का प्रकाशन-संबंधी साहित्य उच्च प्रतीकात्मक है।

मौटे तौर पर कहें तो, प्रतीक एक चिह्न या कोई अन्य प्रस्तुतिकरण है जो अपने से परे किसी वस्तु की ओर संकेत करता है। उदाहरण के लिए, शब्द वे प्रतीक हैं जो विचारों, वस्तुओं, कार्यों, विशेषताओं, इत्यादि बातों को प्रस्तुत करते हैं। राष्ट्रीय झंडे देशों के प्रतीक हैं। और क्रूस मसीहियत का एक पहचानयोग्य प्रतीक है।

उदाहरण के लिए, सुनिए प्रकाशितवाक्य 1:20 में यीशु ने कैसे प्रतीकों को स्पष्ट किया :

> उन सात तारों का भेद जिन्हें तू ने मेरे दाहिने हाथ में देखा था, और उन सात सोने की दीवटों का भेद : वे सात तारे सातों कलीसियाओं के दूत हैं, और वे सात दीवट सात कलीसियाएँ हैं। (प्रकाशितवाक्य 1:20)

इस पद के संदर्भ में यूहन्ना ने मसीह के दर्शन को प्राप्त किया था, जिसमें प्रभु सात तारों को अपने दाहिने हाथ में संभाले हुए था और दीवटों के बीच में चल फिर रहा था। परंतु तारे और दीवट प्रतीकात्मक थे। उन्होंने कलीसियाओं और स्वर्गदूतों को प्रस्तुत किया।

> रूपकात्मक व्याख्या, जो अर्थ को सही रूप में प्रकट नहीं करती है, में जाए बिना ही प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के उचित प्रतीकों को पहचानने और उनकी व्याख्या करने की कुंजी परमेश्वर के वचन में उसके उद्देश्य के अनुसार वास्तव में त्रिरुपीय है। पहली, हमें यह पहचानने की आवश्यकता है कि प्रकाशितवाक्य में पाए जानेवाले अधिकाँश प्रतीक पहले से पुराने नियम के पवित्रशास्त्र में पाए जाते हैं, विशेषकर दानिय्येल, और यहेजकेल और जकर्याह के दर्शनों में। अतः परमेश्वर अपने लोगों के लिए पहले से ही एक विशेष प्रकार की प्रतीकात्मक शब्दावली को तैयार कर रहा था, और यूहन्ना उनका प्रयोग बड़े स्तर पर करता है। दूसरी, हमें पवित्रशास्त्र के ऐसे अन्य भागों पर भी ध्यान देना चाहिए जो और अधिक प्रत्यक्ष रूप से बात करते हैं। हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के प्रतीकों और दर्शनों की व्याख्या उन ऐतिहासिक विवरणों के प्रकाश में करते हैं जो हमें दिए गए हैं, जैसे कि सुसमाचारों में, या उन धर्मशिक्षा-संबंधी खंडों में जिन्हें हम पत्रियों में पाते हैं। और इस प्रकार हम कई बार पवित्रशास्त्र के अधिक कठिन

> लेखनों, अर्थात् प्रकाशितवाक्य के दर्शनों की तुलना अधिक स्पष्ट लेखनों, अर्थात् अधिक प्रत्यक्ष लेखनों के साथ करते हैं। और फिर तीसरी, हमें उस प्रतिज्ञा पर ध्यान देना चाहिए जिसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की सात आशीषों में सबसे पहले दिया गया है कि जो कोई इसे ऊँची आवाज में पढ़ता है और जो इसे सुनते हैं, वे इसे प्राप्त कर सकते हैं, हृदय में बसा सकते हैं, और इसके वचनों को मान सकते हैं; वे इसे समझ सकते हैं। ये कोई ऐसे सुराग या संकेत नहीं है जो उनके पहली सदी के संदर्भ में उनके लिए बंद रहे होंगे। हम इस बात को गंभीरता से लेना चाहते हैं कि इसे पहली सदी के हमारे भाईयों और बहनों को वास्तव में दिया गया था, न कि केवल हमें जो अब बीसवीं सदी में हैं, और वे केवल इसे पढ़ते हुए सुनने के द्वारा समझ सकते थे, और इसे ग्रहण कर सकते थे, और इसके संदेश को प्राप्त करके आशीष प्राप्त कर सकते थे।
>
> — डॉ. डेनिस ई. जॉनसन

बाइबल का प्रकाशन-संबंधी साहित्य अक्सर प्रतीकों का प्रयोग करता है। कुछ प्रतीक काफी विवरणात्मक होते हैं, जैसे कि जब एक लेखक ऐसे प्रतीकों को चुनता है जो दिखने में उसके समान होते हैं जो उसने देखा है। उदाहरण के तौर पर, दानिय्येल 7:4 में दानिय्येल ने एक ऐसे पशु के दर्शन का वर्णन किया है जो उकाब के पंखों के साथ एक सिंह के समान था। सिंह और उकाब विवरणात्मक थे क्योंकि उन्होंने पशु की वास्तविक दिखावट को दिखाया था। और वे प्रतीकात्मक थे क्योंकि उन्होंने उसकी प्रकृति को भी दर्शाया था। सिंह के प्रतीक का अर्थ था कि वह पशु शक्तिशाली और डरावना था। और सिंह के पंखों ने शायद बेबीलोन को दर्शाया हो, जिसे इसकी कलाकृतियों में अक्सर पंखनुमा सिंहों के रूप में दर्शाया जाता था।

अन्य विषयों में, एक प्रतीक की रचना किसी बिंदु को स्पष्ट करने के लिए भी की जा सकती है। उदाहरण के लिए, योएल 2:25 में परमेश्वर ने आक्रमण करनेवाली सेनाओं का वर्णन टिड्डियों के रूप में किया। सेनाएँ टिड्डियों जैसी दिखाई नहीं देती थीं, परंतु उन्होंने टिड्डियों के जैसा व्यवहार किया। वे रोकी न जा सकनेवाली भीड़ के समान थे जिसने उन सबको नाश कर दिया जिनको उन्होंने नाश करना चाहा।

और भी प्रतीकों का प्रयोग किया गया है क्योंकि वे देश के झंडे के समान बातों या विचारों के पारंपरिक प्रस्तुतिकरण हैं। उदाहरण के तौर पर, प्रकाशितवाक्य 1:10-20 में यूहन्ना ने यीशु का एक दर्शन प्राप्त किया जो उच्च प्रतीकात्मक था। यीशु अपनी छाती के चारों ओर एक सुनहरे पटुके के साथ लंबा चोगा पहने हुए मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ। उसका मुख सूर्य के समान चमक रहा था। उसके बाल श्वेत थे। और उसकी आँखें आग के समान ज्वलित थीं। उसके पाँव भट्टी में ताए गए पीतल के समान चमक रहे थे। उसकी आवाज़ बड़े जल की आवाज़ के समान था। उसके मुख से दोधारी तलवार निकलती थी। उसके हाथ में सात तारे थे। और वह सात दीवटों के मध्य खड़ा था।

इन विवरणों ने पुराने नियम के प्रतीकों और रूपकों का स्मरण कराया, और इसलिए यीशु के बारे में कुछ प्रकट किया। उदाहरण के तौर पर, उसके श्वेत वस्त्र और बाल, और उसका चमकता हुआ मुख दानिय्येल 7:9 के परमेश्वर के विवरण का स्मरण कराता है। दीवटों ने मिलाप के तम्बू और मंदिर के साजो-समान का स्मरण कराया, और यह दर्शाया कि यीशु अब भी अपने लोगों के मध्य ठीक वैसे ही उपस्थित था जैसे परमेश्वर पुराने नियम में आराधना के अपने विशेष स्थलों में उनके साथ उपस्थित था। और तारों ने राजाओं और अन्य मानवीय अगुवों के पुराने नियम के विवरणों का स्मरण कराया, जैसे कि गिनती 24:17, यशायाह 14:12 में और अन्य स्थानों पर पाते हैं। अतः जब प्रकाशितवाक्य ऐसे स्वर्गदूतों के रूप में उन तारों के बारे में कहता है जो कलीसियाओं को प्रस्तुत करते हैं, तो यह इस कारण से है कि यीशु संपूर्ण सृष्टि के राजा के रूप में अपने वर्तमान आत्मिक राज्य को प्रकट कर रहा था। मानवीय

दृष्टिकोण से कहें तो रोम ने कलीसिया के अस्तित्व को अपने नियंत्रण में करने की धमकी दी। परंतु प्रतीक ने प्रकट किया कि यीशु के पास कलीसिया पर संपूर्ण सामर्थ्य और अधिकार था।

प्रकाशन-संबंधी लेखन में अक्सर ऐसे रूपक और प्रतीक पाए जाते हैं जिनको समझना आधुनिक पाठकों को कठिन लगता है। परंतु प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अधिकाँश प्रतीक यूहन्ना के मूल श्रोताओं के लिए असमंजसपूर्ण नहीं थे, क्योंकि वे पुराने नियम और उसके चारों ओर के संसार से लिए गए थे। उनका उद्देश्य यूहन्ना के पाठकों को असमंजस में डालना नहीं बल्कि एक प्रभावपूर्ण और चिरस्मरणीय रूप में सत्य को बताना था।

बाइबल के प्रकाशन-संबंधी साहित्य की दूसरी विशेषता यह है कि यह ईश्वरीय प्रकाशनों को प्रकट करती है। बाइबल का प्रकाशन-संबंधी साहित्य शेष पवित्रशास्त्र के समान पवित्र आत्मा से प्रेरित है। यह परमेश्वर के अपने लोगों को दिए गए त्रुटिरहित, पूरी तरह से विश्वसनीय, और आधिकारिक वचन का भाग है। यह सच्चे प्रकाशनों को दर्शाता है जिन्हें मानवीय लेखकों को या तो स्वयं परमेश्वर, या फिर उसके सिद्ध रूप से विश्वसनीय स्वर्गीय संदेशवाहकों के द्वारा प्रदान किया गया था। बाइबल का प्रकाशन-संबंधी साहित्य काल्पनिक नहीं है। यह मानवीय लेखकों का कोई सर्वोत्तम अनुमान नहीं है। इसके विपरीत, यह अपने लोगों के लिए परमेश्वर का सच्चा संप्रेषण है जो अपनी सृष्टि के प्रति उसके अभिप्रायों को प्रकट करता है।

तीसरा, बाइबल के प्रकाशन-संबंधी साहित्य में उल्लिखित ईश्वरीय प्रकाशनों को अधिकतर व्यक्तिगत खुलासों के द्वारा प्राप्त किया जाता है। शब्द प्रकाशन-संबंधी का अपना अर्थ ही "उघाड़ना" या "प्रकट करना" है। अतः मुख्य रूप से बाइबल का प्रकाशन-संबंधी साहित्य ऐसा कार्य है जो अपने लोगों के लिए परमेश्वर की योजना को प्रकट करता है, ताकि वे इस संसार का अर्थ समझ सकें और आशा न खोएँ।

परंतु कुछ अन्य आश्चर्यजनक प्रकाशनों के विपरीत, जैसा कि निर्गमन 13 में जब परमेश्वर इस्राएल के संपूर्ण राष्ट्र के समक्ष बादल के खंभे के रूप प्रकट हुआ था, बाइबल के प्रकाशन-संबंधी प्रकाशन अधिकतर अलग-अलग लोगों को प्राप्त होते थे। भविष्यवक्ताओं ने स्वप्नों को प्राप्त किया था। उन्होंने वाणियों और आवाज़ों को सुना था। उन्होंने दर्शन देखे। स्वर्गीय संदेशवाहकों ने उनसे भेंट की थी। उन्होंने ऐसे अनुभवों को प्राप्त किया जिनमें ऐसा प्रतीत हुआ कि वे अपने शरीरों से बाहर निकले। कई बार उन्होंने स्वयं परमेश्वर से भी भेंट की। परंतु ऐसा व्यक्तिगत रूप से हुआ। फिर यह परमेश्वर के संदेशवाहक और राजदूत के रूप में भविष्यवक्ता पर निर्भर था कि वे परमेश्वर के लोगों के समक्ष संदेश पहुंचाएँ।

बाइबल के प्रकाशन-संबंधी साहित्य की जिस चौथी विशेषता का हम उल्लेख करेंगे, वह यह है यह लौकिक, गैरलौकिक और अलौकिक वास्तविकताओं के बीच की पारस्परिक क्रियाओं का वर्णन करता है।

शब्द लौकिक इस ब्रह्मांड को दर्शाता है जहाँ हम रहते हैं, और जिसमें भौतिक संसार और इसके सभी प्राणी शामिल हैं। शब्द गैरलौकिक प्रकृति से परे के संसार को दर्शाता है। यह वह संसार है जहाँ आत्माओं का निवास है जैसे कि स्वर्गदूत और दुष्टात्माएँ। अंत में, अलौलिक शब्द का अर्थ है प्रकृति से ऊपर, और यह विशेषकर परमेश्वर और उसके कार्यों को दर्शाता है। केवल परमेश्वर ही ऐसा सर्वोच्च प्राणी है जो प्राकृतिक क्षेत्र से पूर्णतया ऊपर है और उसे अपने नियंत्रण में रखता है, अतः केवल वही ऐसा प्राणी है जो वास्तव में अलौकिक है।

ये सारे क्षेत्र नियमित रूप से एक-दूसरे के साथ कार्य करते रहते हैं। परमेश्वर लौकिक और गैरलौकिक क्षेत्रों को अपने नियंत्रण में रखता है। गैरलौकिक क्षेत्र के स्वर्गदूत और दुष्टात्माएँ प्राकृतिक क्षेत्र की घटनाओं को प्रभावित करती हैं। दुष्टात्माएँ हमें पाप करने को प्रलोभित करती हैं। स्वर्गदूत हमारी रक्षा

करते हैं। और पवित्रशास्त्र के अनुसार स्वर्गदूत और दुष्टात्माएँ हमारी अंतर्राष्ट्रीय राजनीति तक को प्रभावित करती हैं।

संपूर्ण पुराने नियम और नए नियम में हम ऐसी आत्मिक शक्तियों की झलक को देखते हैं जो संसार के इतिहास को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के तौर पर, 2 राजाओं 6 में आराम का राजा एलीशा का पीछा कर रहा था। अंततः आराम का राजा एलीशा तक पहुँच गया और उसने उसे घेर लिया, तथा एलीशा का सेवक डर गया।

परंतु सुनिए फिर आगे 2 राजाओं 6:15-17 में क्या हुआ :

> तब उसके सेवक ने उससे कहा, "हाय! मेरे स्वामी, हम क्या करें?" उसने कहा, "मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं।" तब एलीशा ने यह प्रार्थना की, "हे यहोवा, इसकी आँखें खोल दे कि यह देख सके।" तब यहोवा ने सेवक की आँखें खोल दीं, और जब वह देख सका, तब क्या देखा कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है। (2 राजाओं 6:15-17)

यद्यपि गैरलौकिक और अलौलिक क्षेत्रों के विषय में ऐसे विचार पुराने नियम और नए नियम के विभिन्न भागों में यहाँ-वहाँ पाए जाते हैं, परंतु बाइबल का प्रकाशन-संबंधी साहित्य इन विषयों पर बहुत अधिक ध्यान देता है। उदाहरण के तौर पर, योएल, यहेजकेल, दानिय्येल और जकर्याह के भाग अपना ध्यान लौकिक, गैरलौकिक और अलौलिक क्षेत्र की पारस्परिक क्रियाओं पर केंद्रित करते हैं। और लगभग इसी प्रकार प्रकाशितवाक्य की पुस्तक बार-बार परमेश्वर के और परमेश्वर द्वारा अपने उद्देश्यों के लिए नियुक्त आत्मिक शक्तियों और अधिकारों के अदृश्य क्षेत्रों की ओर ध्यान आकर्षित करती है।

> स्वर्गदूत और दुष्टात्माएँ हमारे चारों ओर घटित होनेवाली बातों पर बहुत प्रभाव डालती हैं क्योंकि जिस संसार में हम रहते हैं उस पर परमेश्वर का नियंत्रण है और वह परमेश्वर की योजना के अनुसार एक दिशा में बढ़ रहा है, और यदि हमें शामिल होना है, और यदि हमें उसमें आगे बढ़ना है, तो विश्वास करना होगा कि ऐसे प्राणी वास्तव में अस्तित्व में हैं। इसका एक सबसे आकर्षक पहलू यह है कि अक्सर जब हम स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं के कार्यों के बारे में सोचते हैं, तो हम इन्हें अपने व्यक्तिगत जीवनों, अपने निजी जीवनों के आधार पर सोचते हैं। और यह निश्चित रूप से सत्य है। यह बाइबल में है, इसके बारे में कोई संदेह नहीं है। परंतु याद रखने योग्य एक बड़ी बात यह है कि बाइबल में हम सीखते हैं कि विशेषकर दुष्टात्माओं — और कभी-कभी स्वर्गदूतों को — राष्ट्रों पर अधिकार या शासन दिया गया है, और इसलिए वे परमेश्वर के न्यायालय में इन राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। भजन 82 के समान जहाँ यह कहा गया है कि यहोवा अपनी बड़ी सभा में उपस्थित है और ईश्वर, "छोटे ईश्वर" उसके साथ हैं, और ये वही दुष्टात्माएँ और स्वर्गदूत और गैरलौकिक प्राणी हैं जो विभिन्न राष्ट्रों पर नियंत्रण रखते हैं। और इस प्रकार कई रूपों में, हम यह बात पहचान नहीं पाते, परंतु संसार का राजनैतिक क्षेत्र इस बात से नियंत्रित नहीं होता कि कितने लोग इस व्यक्ति को वोट डालते हैं उस व्यक्ति को वोट डालते हैं या कैसे एक राजा अपने पूर्वजों से राजा बनने का अधिकार प्राप्त करता है, इत्यादि। यह वह तरीका नहीं है। वास्तव में, परदे के पीछे, अर्थात् न दिखाई देनेवाले दृश्य में ऐसी दुष्टात्माएँ और आत्मिक प्राणी हैं जो वास्तव में इस संसार की राजनैतिक शक्तियों के बड़े-बड़े कार्यों पर नियंत्रण रखते हैं।

— डॉ. रिर्चड, एल. प्रैट, जूनियर

अंत में, बाइबल के प्रकाशन-संबंधी साहित्य की पाँचवीं विशेषता यह है कि यह अतीत, वर्तमान और भविष्य पर लौकिक, गैरलौकिक और अलौकिक क्षेत्रों के प्रभाव का वर्णन करता है। प्रकाशन-संबंधी साहित्य इतिहास के सारे पहलुओं पर ध्यान देता है। यह उन रीतियों को स्पष्ट करता है जिनमें लौकिक, गैरलौकिक और अलौकिक क्षेत्रों ने अतीत में हमारे संसार को प्रभावित किया है, कैसे वे वर्तमान में हमें प्रभावित करना जारी रखते हैं, और कैसे वे हमारे भविष्य पर प्रभाव डालेंगे। और इससे भी बढ़कर शेष बाइबल के समान बाइबल का प्रकाशन-संबंधी साहित्य संपूर्ण इतिहास को एक बड़ी कहानी, अर्थात् सृष्टि की कहानी, पाप में पतन, और फिर मसीह के द्वारा छुटकारे के रूप में देखता है। प्रकाशन-संबंधी साहित्य वर्तमान का वर्णन इसके दुःख और कठिनाइयों के आधार पर करता है और ऐसे समय के रूप में भविष्य पर ध्यान देने की प्रवृति रखता है जब हमारी सारी आशाएँ पूरी हो जाएँगी।

कई बार आधुनिक मसीहियों को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को समझने में बहुत कठिनाई होती है क्योंकि हम सामान्यतः उन आत्मिक प्रभावों के बारे में नहीं सोचते जो जीवन के हमारे अनुभवों में पाए जाते हैं। आधुनिक विज्ञान से प्रभावित लोगों के रूप में हम अपने जीवन में घटित होनेवाली बातों के स्वाभाविक विवरणों को देखने की प्रवृति रखते हैं। हम उन बातों पर ध्यान देते हैं जिन्हें हम देख, सुन, चख और छू सकते हैं। परंतु पवित्रशास्त्र यह स्पष्ट करता है कि हमारी ज्ञानेंद्रियाँ हम में और हमारे चारों ओर होनेवाली बातों को केवल आंशिक रूप से समझ सकती हैं।

यह समझने के लिए कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक आज हमें क्या प्रदान करती है, हमें इन स्वाभाविक पूर्वाग्रहों को हटाना होगा और पवित्रशास्त्र की शिक्षा का पालन करना होगा। हमारे भीतर और चारों ओर जो कुछ होता है, वह आत्मिक शक्तियों और स्वयं परमेश्वर के द्वारा गहराई से प्रभावित होता है। जो शायद हमें स्वाभाविक घटनाएँ, व्यक्तिगत समस्याएँ, कलीसिया में परेशानियाँ, और यहाँ तक कि राजनैतिक संघर्ष प्रतीत हों, वे केवल स्वाभाविक घटनाएँ नहीं हैं। ये उन जटिल बातों का परिणाम हैं जिनमें परमेश्वर और आत्मिक वास्तविकताएँ शामिल होती हैं।

जब हम इन विषयों पर बाइबल के दृष्टिकोण को स्वीकार करते हैं, तब प्रकाशितवाक्य बड़े बल के साथ हमसे बात कर सकता है, ठीक वैसे ही जैसे इसने यूहन्ना के पहली सदी के श्रोताओं से बात की थी। हमसे कोई भी उन संपूर्ण आत्मिक वास्तविकताओं को नहीं देख सकता जो हमारे अनुभवों के पीछे पाई जाती हैं। परंतु प्रकाशितवाक्य की पुस्तक इन आत्मिक वास्तविकताओं से परदा हटा देती है ताकि यह हमें यीशु मसीह के द्वारा इतिहास में उद्धार को लाने की परमेश्वर की सार्वभौमिक योजना को दिखाए। वह अब अपनी आत्मा के द्वारा अपनी कलीसिया में उपस्थित है, और वह अपने सारे शत्रुओं पर अंतिम विजय का दावा करने के लिए वापस आएगा।

> प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का विषय यह है: यीशु जय प्राप्त करता है। अब इसका अर्थ यह है कि अंततः हम प्रोत्साहित हो जाएँ। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम क्लेशों का सामना नहीं करेंगे, और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक इस बात का एक शक्तिशाली सूचक है कि कैसे परमेश्वर दंड, और क्लेशों, और गड़बड़ी, और बड़ी वेश्या बेबीलोन जैसी बातों की अनुमति देता है, और ये सब बातें हमारे जीवन में आती हैं, परंतु अंत में नया यरूशलेम स्वर्ग से उतरेगा और यीशु अपने राज्य को स्थापित करेगा। परमेश्वर हमारा परमेश्वर होगा; हम सदा-सर्वदा के लिए उसके लोग होंगे। अतः इससे बढ़कर प्रोत्साहित करनेवाला कुछ नहीं हो सकता।

— डॉ. विलियम एडगर

> प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमें आश्वस्त करती है कि अंत में परमेश्वर अपने सारे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा — एक संपूर्ण विजय। हमें आनंद और पूर्वानुमान के साथ प्रत्युत्तर देना चाहिए, सबसे पहले इसी बात की अपेक्षा करते हुए, और विरोध के सामने दृढ़ निश्चय और प्रतिबद्धता के साथ, इस जीवन में परीक्षाओं के सामने यह जानते हुए कि अंत उन सारे विरोधों और दुखों पर विजय प्राप्त कर लेगा जिनका हम अब सामना करते हैं।
>
> — डॉ. वेर्न एस. पोयथ्रेस

> प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की एक बड़ी सीख यह है कि परमेश्वर अपने और हमारे सब शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा। यह कलीसिया के लिए बहुत उत्साहित करनेवाला संदेश है। यह एक ऐसी बात है जो कलीसिया के लिए निश्चित रूप से उस दुःख में बहुत महत्वपूर्ण है जिसमें से होकर वह इस युग के दौरान जा रही है। अतः यह एक बड़े प्रोत्साहन का संदेश है कि परमेश्वर अपने दृष्टिकोण से सब बातों को एक संतोषप्रद निष्कर्ष की ओर लेकर आएगा, और समय के अंत में कलीसिया विजय प्राप्त करेगी।
>
> — डॉ. कार्ल आर. ट्रूमैन

अब जबकि हमने बाइबल के प्रकाशन-संबंधी साहित्य की विशेषताओं का अध्ययन कर लिया है, इसलिए आइए इसके ऐतिहासिक विकास की ओर हम अपना ध्यान लगाएँ।

ऐतिहासिक विकास

बहुत से आलोचनात्मक धर्मविज्ञानियों ने यह सोचा है कि छठी सदी ईसा पूर्व में इस्राएल के बेबीलोनी निर्वासन के बाद इस्राएल के बाद के इतिहास में बाइबल का प्रकाशन-संबंधी साहित्य बेबीलोनी और फारसी प्रभावों से आया। परंतु नई खोज ने यह दिखाया है कि प्रकाशन-संबंधी शैली की मुख्य विशेषताएँ बाइबल के प्रकाशन के आरंभिक समय में विकसित होनी शुरू हुईं जब इस्राएल ने अपने चारों ओर के कनानी और अन्य पश्चिमी सामीवादी लोगों की संस्कृतियों के साथ जुड़ना आरंभ किया।

ऐसे कई तत्व जो बाइबल के प्रकाशन-संबंधी साहित्य में प्रमुख बन गए हैं, वे पुराने नियम की आरंभिक पुस्तकों में भी पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, निर्गमन 15 में एक बहुत ही प्रतीकात्मक गीत है जो इस बात का गुणगान करता है कि परमेश्वर ने मिस्री सेना को लाल समुद्र में डुबो दिया। यह परमेश्वर द्वारा अपने दाहिने हाथ से मिस्रियों को नाश करने, उन्हें भूसे के समान जला देने, अपनी साँस की हवा से जल को इकट्ठा करने, और उन्हें पृथ्वी में समवा देने के बारे में बात करता है। यह आगे यह भी कहता है कि जातियाँ परमेश्वर के भय में दुबक जाएँगी, ताकि इस्राएल प्रतिज्ञा की भूमि पर स्थापित हो जाए, और ताकि परमेश्वर उनके अनंत राजा के रूप में वहाँ उनके बीच सदा के लिए वास करे।

मूसा की पुस्तकों में से एक और उदाहरण गिनती 24:17 में बिलाम की भविष्यवाणी है, जहाँ इस्राएल में राजवंश के उदय का वर्णन एक तारे के रूपक में किया गया है।

साहित्य की यह शैली इस्राएल के संपूर्ण इतिहास में उतरोत्तर और अधिक विकसित हुई। अय्यूब 26:12 और भजन 89:10 में परमेश्वर द्वारा आकाशीय युद्ध में साँप रहब के घात किए जाने के विषय में बात करते हैं। और अय्यूब 41 में परमेश्वर ने लिब्यातान, अर्थात् समुद्री दानव, पर अपनी सामर्थ्य की घोषणा की। और भविष्यवक्ताओं ने योएल, दानिय्येल, यहेजकेल और जकर्याह जैसी पुस्तकों में और भी बड़े स्तर पर प्रकाशन-संबंधी रूपक को विकसित करना जारी रखा। उदाहरण के लिए, दानिय्येल 7

दानिय्येल के स्वप्न का वर्णन करता है जिसमें बड़े-बड़े जन्तु समुद्र से निकलते हैं। उस स्वप्न का अंत तब होता है जब परमेश्वर उनमें से सबसे अंतिम और भयंकर जन्तु को दंड देकर नाश करता है।

पुराने नियम की समाप्ति के ठीक बाद की अवधि को अक्सर "मध्य की अवधि" कहा जाता है क्योंकि इसे पुराने नियम के बाद और नए नियम से पहले लिखा गया था। इस समय के दौरान, प्रकाशन-संबंधी साहित्य पूरी तरह से एक भिन्न शैली के रूप में विकसित हो गया था, और कई प्रेरणा-रहित, बाइबल से बाहर की प्रकाशन-संबंधी पुस्तकें लिखी गई थीं। इनमें दी अजम्पशन ऑफ़ मोसेस, हनोक, 2 एसद्रास के भाग, दी एपोकालिप्स ऑफ़ बारूक, और कुमरान में प्राप्त दी वॉर स्क्रोल शामिल हैं। यद्यपि ये पुस्तकें बाइबल का भाग नहीं हैं, फिर भी हम इनका उल्लेख इसलिए करते हैं क्योंकि ये प्रकाशन-संबंधी शैली के विकास का पता लगाने में हमारी सहायता करती हैं।

ये पुस्तकें अपने श्रोताओं के पृथ्वी पर के अनुभवों के पीछे के आकाशीय संघर्षों पर बहुत अधिक निर्भर थीं। इन्होने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के रूपकों से काफी कुछ लिया, और उनको एक साथ मिलाकर इन रूपकों के और अधिक विस्तृत प्रयोगों को विकसित किया। मध्य की अवधि के प्रकाशन-संबंधी साहित्य के ये विशेष पहलू नए नियम के प्रकाशन-संबंधी साहित्य में भी देखने को मिलते हैं।

यद्यपि मध्य की अवधि के प्रकाशन-संबंधी लेखनों में बाइबल के प्रकाशन-संबंधी लेखनों के साथ कुछ समानताएँ हैं, फिर भी उनमें ऐसी विशेषताएँ भी हैं जो उन्हें कुछ महत्वपूर्ण रूपों में पवित्रशास्त्र से अलग करती हैं। उदाहरण के तौर पर, कई छद्मनामी हैं, अर्थात् किसी दूसरे के नाम से लिखी गईं हैं ताकि लोग पढ़ने के लिए प्रोत्साहित हों और किसी दूसरे के नाम से लिखी पुस्तक को विश्वसनीय मानते हुए स्वीकार करें। परंतु यह एक गलत कार्य था, और 2 थिस्सलुनीकियों 2:2 में पौलुस ने इसकी निंदा की। बाइबल से बाहर के कुछ प्रकाशन-संबंधी लेखनों ने अतीत की घटनाओं के बारे में ऐसे बात की जैसे कि अब तक हुई ही न हों, ताकि वे यह दर्शा सकें कि लेखक ने इस्राएल के पूरे इतिहास के बारे में पहले से ही सही सही बता दिया था। निस्संदेह, यह झूठ का एक अन्य रूप है। और बाइबल का प्रकाशन-संबंधी साहित्य कभी इस तरह की युक्ति का प्रयोग नहीं करता।

नए नियम में, प्रकाशन-संबंधी साहित्य की शैली का विकास होना जारी रहा। अब, हमें यह याद रखना है कि नए नियम का प्रकाशन-संबंधी साहित्य मध्य की अवधि के साहित्य से बिल्कुल अलग है। नया नियम पूरी तरह से सच्चा और विश्वासयोग्य है। वहीं, नए नियम का प्रकाशन-संबंधी साहित्य एक ऐसी शैली का प्रयोग करता है जो मध्य की अवधि के प्रकाशन-संबंधी साहित्य के काफी समान है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अतिरिक्त हम प्रकाशन-संबंधी शैली के प्रकारों को मत्ती 24 जैसे स्थानों में पाते हैं। इस अध्याय में यीशु ने यरूशलेम के मंदिर के विनाश, और यहाँ तक कि संसार के अंत जैसी भविष्य की घटनाओं को स्पष्ट करने के लिए दानिय्येल और यशायाह के प्रकाशन-संबंधी दर्शनों से बातों को लिया। उदाहरण के लिए, मत्ती 24:29 में यीशु ने सूर्य और चंद्रमा के अंधकारमय होकर प्रकाश न देने और तारों के आकाश से गिर पड़ने के बारे में बात की।

पौलुस की पत्रियों में भी प्रकाशन-संबंधी शैली के संकेत मिल सकते हैं। पौलुस ने अक्सर यह दर्शाते हुए अपने पाठकों को आशा प्रदान की कि मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान ने दुष्टात्मा की शक्तियों को पराजित कर दिया है, जैसे कि कुलुस्सियों 1:15-20 और 2:13-15 में। उसने बार-बार ऐसे रूपों में आत्मिक युद्ध के बारे में बात की जो प्रकाशन-संबंधी लेखनों से मिलते-जुलते थे। और 2 थिस्सलुनीकियों 2 में उसने दुष्ट की आकाशीय शक्तियों के बारे में बात की जिन्हें मसीह के पुनरागमन पर पराजित कर दिया जाएगा।

परंतु निस्संदेह, नए नियम का वह लेखन जो बाइबल के प्रकाशन-संबंधी साहित्य के अंतिम विकास का सर्वोत्तम उदाहरण है, वह है प्रकाशितवाक्य की पुस्तक। प्रकाशितवाक्य जटिल है क्योंकि इसमें प्रकाशन-संबंधी विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है। परंतु यह शेष पवित्रशास्त्र में भी गहराई से पाया जाता है। और जब हम इसे पढ़ते हैं तो हमें इससे राहत मिलनी चाहिए। यह पुस्तक शायद हमें

थोड़ी अनजानी लगे, परंतु शेष पवित्रशास्त्र हमें इसके संदेश को समझने में, और साथ ही आधुनिक संसार में अपने जीवनों पर इसे लागू करने में सहायता कर सकता है।

प्रकाशितवाक्य की साहित्यक पृष्ठभूमि को समझना हमारे लिए एक बहुत बड़ी सहायता है। यह तथ्य कि प्रकाशितवाक्य में मुख्य रूप से प्रकाशन-संबंधी भविष्यवाणी ही पाई जाती है, हमें आश्वस्त करता है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का उद्देश्य हमें अपने हृदयों से परमेश्वर की आज्ञा मानने के प्रति प्रेरित करना है। इसके शब्दों और रूपकों का उद्देश्य हमें असमंजस में डालना, या एक अपरिवर्तनीय भविष्य के बारे में हमें उलझन में डालना नहीं है। इसके विपरीत, प्रकाशितवाक्य का उद्देश्य परमेश्वर की सेवा के प्रति समर्पित जीवन के एक सुबोध, प्रोत्साहक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करना है। जब हम अन्य अध्यायों में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का और गहराई से अध्ययन करेंगे, तो प्रकाशन-संबंधी भविष्यवाणी के रूप में इसके कार्य को समझना हमें इसके संदेश को समझने में, और इसकी शिक्षाओं के अनुसार जीवन व्यतीत करने में सहायता करेगा।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की पृष्ठभूमि के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं का सर्वेक्षण किया है। हमने इसके लेखक, इसके लेखन के समय, और मूल श्रोताओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए इसकी ऐतिहासिक संरचना का अध्ययन किया है। हमने नए नियम के युगांत-विज्ञान, वाचा की धारणा, और भविष्यवक्ताओं की भूमिका के आधार पर इसके धर्मवैज्ञानिक संदर्भ पर ध्यान दिया है। हमने प्रकाशितवाक्य की साहित्यक पृष्ठभूमि का, विशेषकर भविष्यवाणी और प्रकाशन-संबंधी साहित्य की शैलियों के साथ इसके संबंध का वर्णन किया है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक आज शायद हमें विचित्र लगती हो। परंतु इसकी मूल संरचना में शायद इसे समझना काफी सरल हो। जिन रूपों का प्रयोग यूहन्ना ने किया और जिन बातों को उसने कहा, वे शायद उसके पहले श्रोताओं के लिए परिचित होंगे। और जितना अधिक हम उनके संदर्भ और दृष्टिकोणों को समझते हैं, उतना अधिक हम यूहन्ना के संदेशों को समझ पाएँगे, और उसे अपने जीवन में लागू कर पाएँगे। चाहे हम मसीह और सुसमाचार के कारण दुःख उठा रहे हों, या फिर शांति का आनंद ले रहे हों, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमें यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने और उस अद्भुत भविष्य की आशा रखने की शिक्षा देती है जिसकी योजना परमेश्वर ने उस पर भरोसा रखनेवालों के लिए बनाई है।